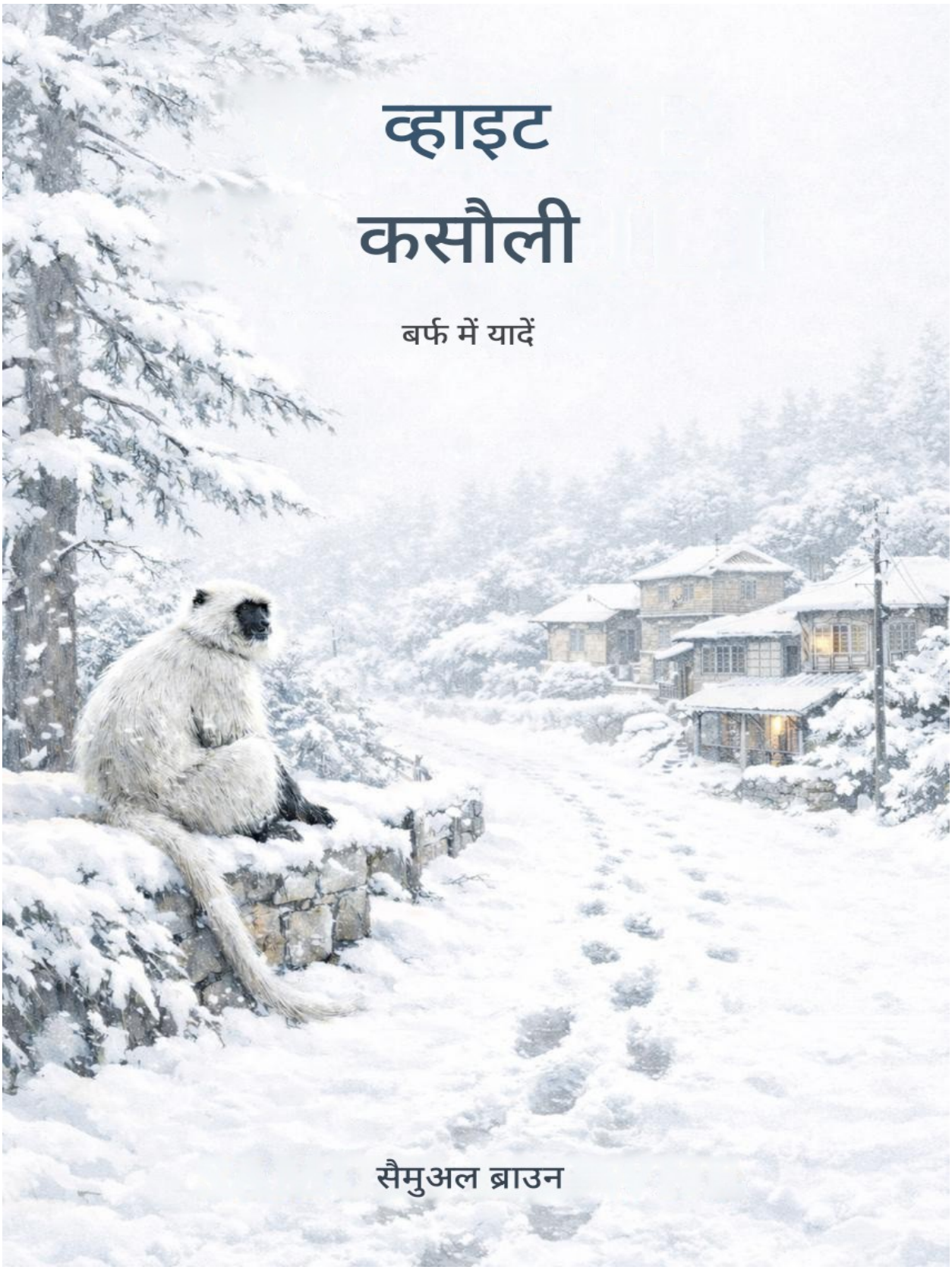

व्हाइट कसौली

बर्फ में यादें

सैमुअल ब्राउन

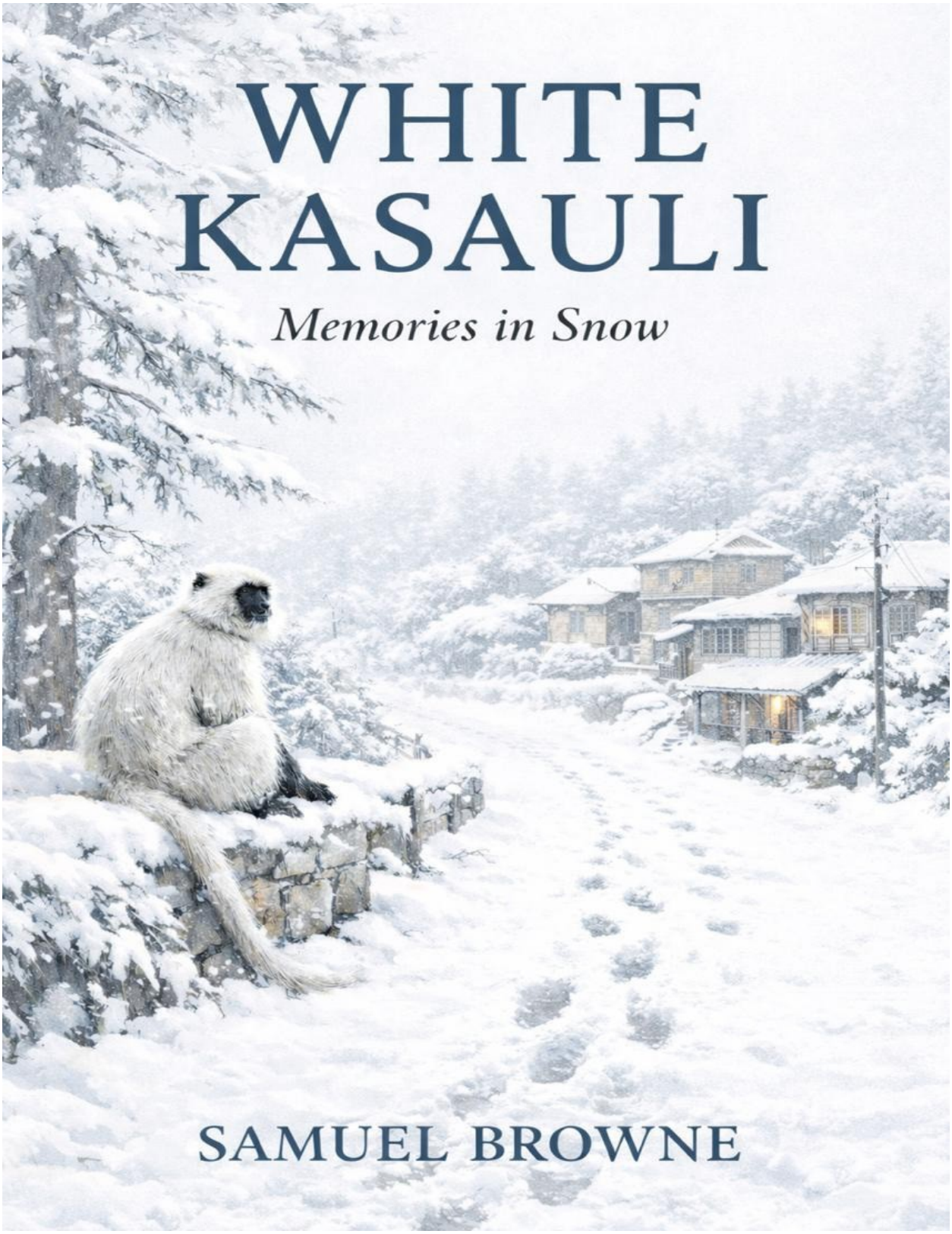
WHITE
KASAULI
Memories in Snow
SAMUEL BROWNE

WHITE KASAULI

बर्फ में यादें
सैमुअल ब्राउन द्वारा

कॉपीराइट पृष्ठ
© 2025 सैमुअल ब्राउन
सर्वाधिकार सुरक्षित।
लेखक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक रूप से, पुनरुत्पादित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है।
यह पुस्तक संस्मरण और आत्मचिंतन का संग्रह है। नाम, घटनाएँ, स्थान और स्थल स्मृति से लिए गए हैं और इनका उपयोग किसी समय, स्थान और वास्तविक अनुभव को दर्शाने के लिए किया गया है, न कि उन्हें ऐतिहासिक, संस्थागत या आधिकारिक अभिलेख के रूप में प्रमाणित करने या सत्यापित करने के लिए। मौसम, भूदृश्य और मौसमी जीवन का वर्णन उस अवधि के दौरान उनके अनुभव और स्मृति को दर्शाता है।
पहला संस्करण 2026
कवर आर्ट क्रेडिट
कवर आर्टवर्क, लेखक के निर्देशन में एआई टूल्स का उपयोग करके बनाई गई कसौली की एक कल्पनात्मक प्रस्तुति है। इसका उद्देश्य कसौली का फोटोग्राफिक चित्रण करना नहीं है।

समर्पण
मेरी पत्नी को, जो कसौली की ठंडी हवाओं और चीड़ की खुशबू से महकती पगडंडियों पर जन्मी; मेरे माता-पिता, गुरुओं, बड़ों और उन सभी को जिन्होंने हमारे शुरुआती वर्षों की शांत लय को आकार दिया। और सर्दियों में कसौली को—जब बर्फ छतों को नरम कर देती थी, चीड़ के पेड़ों को शांत कर देती थी और जानी-पहचानी सड़कों और पगडंडियों को आश्चर्य के नज़ारों में बदल देती थी।
हम उन बर्फीली सुबहों के बच्चे थे—बिना किसी आवाज़ के बर्फ गिरते देखना, शांत गलियों में कदमों के निशान ढूंढना, सुलगती आग के पास अपने हाथों को सेंकना और पहाड़ियों से ही शांति सीखना। शहर सर्दियों की चादर में लिपटा हुआ थम सा जाता था, और उस ठहराव में हमें अपनापन, गर्माहट और एक ऐसी खुशी मिलती थी जो सिर्फ उसी मौसम में मिलती थी।

अस्वीकरण
यह पुस्तक लेखक के व्यक्तिगत संस्मरणों का संग्रह है, जो 1960 और 1970 के दशक के दौरान कसौली में बिताए शीतकालीन जीवन की बचपन की यादों पर आधारित है। हिमपात, मौसम की स्थिति, घर, सड़कें, रास्ते, संस्थान और दैनिक जीवन का वर्णन उस अवधि के दौरान उनके अस्तित्व और अनुभवों को दर्शाता है।
कुछ घटनाएं, प्रथाएं और मौसमी विवरण स्मृति के आधार पर या वास्तविक जीवन के अनुभवों और सामुदायिक स्मृति से प्राप्त समझ के अनुसार प्रस्तुत किए जाते हैं। समय के साथ, कई स्थानों, नामों और पर्यावरणीय स्थितियों के स्वरूप, उपयोग या प्रकृति में परिवर्तन आ सकता है।
इन स्मृतियों को यथार्थ रूप से प्रस्तुत करने का पूरा ध्यान रखा गया है, फिर भी यह वृत्तांत किसी आधिकारिक ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, मौसम संबंधी या कानूनी अभिलेख के रूप में अभिप्रेत नहीं है। इसका उद्देश्य कसौली में शीत ऋतु के वातावरण, भावनाओं और लेखक द्वारा व्यक्तिगत रूप से याद किए गए अनुभवों को संरक्षित करना है।

यह कहानी शुरू से अंत तक नहीं सुनाई जाती। यह एक वापसी है— सर्दियों की ओर, खामोशी की ओर, और उन शांत यादों की ओर जो जीवन की गति धीमी होने पर उभरती हैं।

प्रस्तावना
"कुछ सर्दियाँ ऐसी होती हैं जो कभी नहीं पिघलतीं - वे स्मृतियों में बसी रहती हैं।"
कसौली में हर सर्दी की अपनी एक शांत लय होती थी—समय पर बर्फ गिरती थी, मानो कोई वादा निभा रही हो। हमें कभी मौसम पूर्वानुमान की ज़रूरत नहीं पड़ती थी; आसमान खुद ही सब कुछ बता देता था। हवा शांत हो जाती थी, चीड़ के पेड़ गहरे रंग के हो जाते थे, और कहीं न कहीं हमारे भीतर यह बात छिपी होती थी—कल दुनिया सफेद हो जाएगी।
मुझे वो सुबहें याद हैं जब सब कुछ चमकता था—छतें, रेलिंग और पाले से ढकी चीड़ की पत्तियाँ। पहाड़ियाँ अछूती लगती थीं, मानो दुनिया नई बनी हो। हर घर में आग जल रही होती थी; चीड़ की खुशबू गलियों में फैली होती थी। लोग एक-दूसरे का अभिवादन उस गर्मजोशी से करते थे जो केवल ठंड के मौसम में ही मिल सकती है।
व्हाइट कसौली आपको उन सर्दियों की याद दिलाता है— शांति, हंसी, स्कूल की छुट्टियां और वे छोटे-छोटे रीति-रिवाज जो बर्फबारी को एक उत्सव बना देते थे। यह सिर्फ मौसम के बारे में नहीं है; यह इस बारे में है कि कैसे शहर और उसके लोग बर्फ के हर टुकड़े के गिरने के साथ जीवंत हो उठते थे।
ये विचार उस समय को श्रद्धांजलि हैं जब पहाड़ियों में जीवन धीमी गति से, अनुमानित रूप से और गरिमापूर्ण ढंग से चलता था - एक ऐसा समय जब बर्फ को न केवल देखा जाता था, बल्कि महसूस किया जाता था, जिया जाता था और याद किया जाता था।

प्रस्तावना: श्वेत कसौली में कदम रखें (1960-70 के दशक)
नवंबर 1959। मैं सात दिन का था जब मेरे माता-पिता मुझे दिल्ली से पहाड़ियों पर ले गए— ऊन की कई परतों में लिपटा हुआ, नन्हे हाथ माँ द्वारा बुने हुए दस्तानों में छिपे हुए। वह सर्दी भीषण और निश्चित रूप से आई, कसौली पर छह इंच या उससे अधिक बर्फ की चादर बिछ गई। छतें, रेलिंग और चीड़ के पेड़ सफेद सन्नाटे में गायब हो गए। हवा भी नई सी लग रही थी—पतली, तीखी और राल व पाले की महक से भरी हुई। शाम ढलते ही रास्ते पर बने पदचिह्न भोर तक गायब हो गए; दुनिया फिर से साफ होकर जाग उठी, अपनी चमकदार चादर के नीचे शांत।
अंदर, अंगीठियों की चटकने की आवाज़ गूंज रही थी और जलती हुई चीड़ की लकड़ी की महक कमरों में फैली हुई थी। विक्टोरियन वास्तुकला हर जगह दिखाई दे रही थी—ऊँची छतें, लंबे बरामदे, और पत्थर के फर्श जो ठंड को रोक कर रखते थे। हम कसौली में अंग्रेजों द्वारा बनाए गए सैनिटोरियम क्वार्टर में रहते थे, जो सर्दियों की तेज़ हवाओं और कोहरे से बचाव के लिए मज़बूत थे। ऊनी कपड़ों ने अंदर की ठंडक को कम कर दिया; कुत्ते घर में इधर-उधर घूम रहे थे, पूंछ हिला रहे थे और उनके पंजे पत्थर पर हल्के से थपथपा रहे थे। बाहर, लंगूर बर्फ से ढकी शाखाओं पर दुबके हुए थे, उनके भूरे शरीर उनके अपने फर कोट में लिपटे हुए थे, सूरज की प्रतीक्षा कर रहे थे। और हमारे ऊपर, ड्रमबार के पास अस्तबलों में, घोड़े सफेद सुबह में स्थिर खड़े थे, उनकी सांसें जमी हुई हवा में धुएं की तरह उठ रही थीं।
यह पर्यटकों और यातायात से भरी कसौली नहीं थी, बल्कि एक शांत, सौम्य दुनिया थी जहाँ बर्फ समय पर गिरती थी और ऋतुएँ अपनी लय

में चलती थीं। हर गली, हर ढलान में रोमांच, हंसी और आश्चर्य की अपनी एक अलग ही झलक थी।
आज भी मैं बर्फ से मंत्रमुग्ध हूँ—जिस तरह यह हर चीज़ को शांत सुंदरता में बदल देती है, मानो ईश्वर की शांति और पूर्णता की रचना हो। कोई भी दो बर्फ के टुकड़े एक जैसे नहीं होते, हर एक छोटा, नाज़ुक नमूना होता है—फूलों के आकार का, सृष्टिकर्ता की रचना। जल का सबसे शुद्ध रूप, स्वर्ग से धीरे-धीरे उतरता हुआ। शायद उस पहली सर्दी ने मेरे भीतर कुछ गहरा भाव जगा दिया— मौन के लिए, पहाड़ों के लिए, स्थिरता के लिए प्रेम। बाद के वर्षों में, मैंने हिमालय और माउंट एवरेस्ट पर लिखी किताबें बड़े चाव से पढ़ीं, उन भयंकर हवाओं, सुनसान चोटियों और ठंड में ऊपर चढ़ने के लिए आवश्यक साहस की कल्पना की। उन पन्नों में कहीं न कहीं, मैं उसी स्थिरता की तलाश कर रहा था जिसे मैंने बचपन में महसूस किया था—बर्फ से ढके कसौली की स्थिरता।
इससे मुझे रोमांच का एक शांत एहसास भी मिला - चुनौतियों पर काबू पाने की इच्छा, ठंड से जूझने की इच्छा, और चढ़ाई में ही गर्माहट और अर्थ खोजने की इच्छा।
अब संभलकर कदम बढ़ाएं, और बर्फ आपको वापस उस सफेद कसौली में ले जाए जिसने मेरी शुरुआती यादों को आकार दिया और जिसकी खामोशी आज भी मेरे दिल में बसी हुई है।
"जहां बर्फ हमेशा समय पर गिरती थी, और यादें कभी नहीं पिघलती थीं।"

अध्याय एक

वह कसौली जिसे हम जानते थे
मेरे लिए कसौली महज़ एक पहाड़ी कस्बा नहीं था। यह अपने आप में एक अलग ही दुनिया थी—एक ऐसी दुनिया जहाँ मैं किशोरावस्था में पली-बढ़ी; हर मौसम की अपनी एक लय थी, जहाँ सुबह कोहरे से ढकी रहती थी और दोपहर चीड़ की खुशबू से महकती थी, और जहाँ शामें पहाड़ियों पर हमारी हँसी की मधुर गूँज बिखेरती थीं। सभी मौसमों में, सर्दियों का जादू अद्वितीय था। पहली बर्फ़बारी, कुरकुरी और कोमल, परिचित परिदृश्य को आश्चर्य और रोमांच की भूमि में बदल देती थी।
यह संस्मरण उन बर्फीले दिनों और रातों की यात्रा है, जहाँ बर्फ के टुकड़े मात्र जमे हुए पानी की बूँदें नहीं थे, बल्कि रोमांच, आनंद, शरारत और खोज के निमंत्रण थे। यह स्मृति, आश्चर्य और पहाड़ों, बर्फ और प्रकृति की शांत भव्यता के बीच रहने से मिलने वाले शुद्ध, असीम आनंद का एक अध्याय है।
कसौली: मेरा बचपन का पहाड़ी कस्बा
मेरा पालन-पोषण 1959 से 1975 तक कसौली में हुआ—एक ऐसा शहर जो दुनिया से कटा हुआ सा लगता था, हिमालय की तलहटी में एक हरी-भरी पहाड़ी पर शांति से बसा हुआ। कुछ पर्वत श्रृंखलाओं की दूरी पर शिमला था, जो अंग्रेजों की पुरानी ग्रीष्मकालीन राजधानी थी, जहाँ औपनिवेशिक वैभव की गूँज आज भी सुनाई देती थी। लेकिन कसौली की अपनी एक अलग लय थी, अपना एक शांत आकर्षण था, और मैं उसी में डूबा हुआ बड़ा हुआ।
परिवर्तन के साथ तालमेल बिठाना

फिर भी, इसके केंद्र में विनम्र पहाड़ी लोग बसे थे— सौम्य, शांत और कभी भी अहंकार न दिखाने वाले। वे आसानी से सबके साथ घुलमिल जाते थे, उनकी गर्मजोशी और सादगी कसौली के जीवन का अभिन्न अंग बन गई थी। उनके तौर-तरीके, उनकी मधुर बोली और उनका शांत शिष्टाचार इस कस्बे को एक अमिट पहचान प्रदान करते थे। उनकी संस्कृति, उनका भोजन और उनका रहन-सहन धीरे-धीरे शहर के जीवन में समाहित हो गया— सरल, सच्चा और ज़मीनी।
कई महिलाएं उच्च पदों पर थीं, जबकि अन्य घरों में नौकरानी और सहायक के रूप में काम करती थीं। अम्माएं हमारे लिए खाना बनाती थीं, माता-पिता के अनुपस्थित रहने पर हमारी देखभाल करती थीं और दैनिक जीवन की लय को बनाए रखती थीं। किसान भी अपनी मेहनत और मिट्टी से सने हाथों से कस्बे का भरण-पोषण करते थे। वे पहाड़ियों से अनाज, स्थानीय मक्का (कुकरी) और हर घर के रसोई बगीचे में उगने वाला प्रिय पहाड़ी खीरा लाते थे। इसकी त्वचा पर छोटे-छोटे दाने होते थे, बिल्कुल कैक्टस की तरह, और इसका स्वाद मैदानी इलाकों से आने वाले खीरों से बिल्कुल अलग होता था। अन्य सब्जियों के साथ-साथ, इन फसलों से हर घर का पोषण होता था।
यहां का जीवन अक्सर किसी फिल्म सेट के दृश्य जैसा लगता था— शालीन, गरिमामय और सुव्यवस्थित। लोगों में ईमानदारी झलकती थी, एक शांत शिष्टाचार जो उनके बोलने और व्यवहार में दिखाई देता था। कपड़े इस्त्री किए हुए होते थे, शिष्टाचार बेदाग होता था, और यहां तक कि सबसे साधारण सैर भी किसी खास अवसर जैसी लगती थी। संकरी सड़कों पर गाड़ियां धीरे-धीरे और व्यवस्थित ढंग से चलती थीं, विनम्रतापूर्वक रास्ता देती थीं और हर साइनबोर्ड पर ध्यान देती थीं। मेरा पसंदीदा साइनबोर्ड—जो मुझे आज भी याद है—बस इतना लिखा था: "ऊपर की ओर जाने वाले वाहनों को रास्ता दें।"

दिल था। चीड़ के पेड़ हर गली और सड़क को घेरे हुए थे, जिनकी सुगंध पहाड़ों की ताज़ी हवा में घुलमिल जाती थी।
इन शांत गलियों से, अपर और लोअर मॉल कस्बे की रीढ़ की हड्डी की तरह फैले हुए थे, जो जीवन को इसके किनारों तक ले जाते थे और स्थानीय लोगों और पर्यटकों दोनों को कसौली की लय और दूर तक फैले पहाड़ों का नजारा पेश करते थे। इन सब बातों ने कसौली को एक अनोखा हिल स्टेशन बना दिया था—सुव्यवस्थित, सुंदर और शांत जीवंतता से भरपूर।
अपर मॉल और लोअर मॉल
अपर मॉल पर, रेलिंग से पहाड़ों का मनमोहक दृश्य दिखाई देता था, जिनकी नुकीली चोटियाँ दूर की धुंध में धुंधली सी चमक रही थीं। एक पत्थर के खंभे पर लगा एक संकेतक लोहे पर हिमालयी पर्वतमालाओं और चोटियों के नाम उकेरे हुए थे, जबकि धूपघड़ी और वर्षामापी चुपचाप समय और वर्षा को माप रहे थे, जो ऋतुओं के धीमे, स्थिर परिवर्तन का संकेत दे रहे थे। चीड़ की सुगंध से महकी हवा ताज़ी थी, जिसमें शुरुआती सर्दियों में भी हल्की ठंडक महसूस हो रही थी, और ठंडी हवा स्कार्फ और दस्तानों को खींच रही थी। कभी- कभी बर्फ रेलिंग पर जम जाती थी, कोनों पर चमकीले क्रिस्टल की तरह चिपकी रहती थी, और सूर्य की रोशनी में हल्की-हल्की चमक बिखेरती थी।
विडंबना यह थी कि यह जगह पूरी तरह से हमारे लिए ही थी। कसौली, जिसे जानबूझकर बाहरी दुनिया से अलग रखा गया था, काफी हद तक अप्रकाशित रहा—पहाड़ियों में छिपा एक रहस्य। यहाँ बहुत कम पर्यटक आते थे, और कस्बे की शांत लय केवल यहीं रहने वालों की थी। हमारे पैरों के नीचे बिछे पत्थर हर कदम पर सरसराते थे, दूर से चिमनियों से धुएं के हल्के बादल निकलते थे, और सूरज की किरणें

टिन की छतों से टकराकर नीचे घाटी में चमकती थीं। अगर बर्फ गिरती, तो मल्ल्स एक निजी दुनिया में बदल जाते, जहाँ हवा का हर झोंका, बर्फ की हर चरमराहट और दूर से आती हर गूंज केवल कसौली के बच्चों की ही होती।
यहां से नीचे दूर तक चंडीगढ़ के मैदान फैले हुए थे, और सर्दियों में क्षितिज चमकीले नारंगी रंग का हो जाता था, मानो सूरज खुद आग में डूब रहा हो। दुकानें और कैफे कम थे, फिर भी हर एक की अपनी एक अलग पहचान, आकर्षण और इतिहास की झलक थी।
नीचे, लोअर मॉल में चहल-पहल धीमी गति से चल रही थी। रास्तों के किनारे पत्थर की प्राचीरें बनी हुई थीं, और स्थानीय लोग वहां इकट्ठा होकर कहानियां सुना रहे थे और एक-दूसरे का अभिवादन कर रहे थे। बच्चे खुलकर खेल रहे थे, उनकी हंसी ठंडी हवा में गूंज रही थी, उनके दस्ताने गीले थे और स्कार्फ झंडों की तरह लहरा रहे थे। कुछ सतर्क पर्यटक इधर-उधर घूम रहे थे और टट्टू की सवारी का आनंद ले रहे थे, लेकिन कसौली ज्यादातर बाहरी लोगों के लिए बंद ही रहा, एक आत्मनिर्भर कस्बा, हिमालय की तलहटी में बसा एक अनोखा शहर।
सामान्य परिस्थितियों में, बड़े और मजबूत हाथ से खींचे जाने वाले रिक्शे बस स्टॉप से चलते थे, पुरुष यात्रियों को ऊपरी मॉल तक और निचले मॉल तक ले जाने के लिए पत्थरों से बनी सड़कों पर ज़ोर लगाते थे। लकड़ी के डंडे पत्थरों पर लयबद्ध ढंग से घिसते थे, चमड़े के हार्नेस चरमराते थे—जो शहर के लिए एक मानवीय धड़कन की तरह थे—लेकिन बर्फ के नीचे, वे शांत पड़े थे, मानो बर्फ की सफेदी ने उनके रोज़मर्रा के काम को रोक दिया हो। बर्फ रिक्शे की सीटों और डंडों पर जम गई थी, जिससे वे जमी हुई

[illegible]

[illegible]

[illegible]

रास्तों पर धीरे-धीरे कदमों की आहट के साथ बाहर निकल रहे थे, बर्फ पर क्षणिक निशान छोड़ रहे थे—ऐसे निशान जिन्हें पहाड़ी हवाएँ जल्द ही मिटा देंगी।
प्रारंभिक यादें
मैं पहली बार कसौली में एक शिशु के रूप में आया था—अपने माता- पिता की गोद में, इस बात से अनजान कि एक दिन ये पहाड़ियाँ मेरे शुरुआती सपनों और गहरे स्नेह की पृष्ठभूमि बनेंगी। चीड़ की खुशबू से भरी हवा, पास की पहाड़ियों में गूंजती ट्रेन की दूर की सीटी और बाज़ार में गिरजाघर की घंटियों की मधुर ध्वनि धीरे- धीरे मेरे बढ़ते संसार की लय में घुलमिल गई।
लेकिन कसौली को मैं सही मायने में 1960 के दशक के उत्तरार्ध में जान पाया, जब मैं एक युवा किशोर था। आज भी, उन वर्षों की यादें - चीड़ की पत्तियों की सुगंध, पत्थरों पर कदमों की गूंज, बाज़ार की हल्की चहल-पहल, अपर और लोअर मॉल की सैर, और पहली बर्फबारी की कोमल खामोशी - मेरे मन में बसी हुई हैं, एक ऐसे शहर की छवि जो शाश्वत और जीवंत दोनों है। मुझे आज भी सैनिटोरियम परिसर और वुडकॉट मैदान में बिताई गई हमारी चंचल दोपहरें याद हैं, जहाँ हँसी पहाड़ों की हवा की तरह स्वतंत्र रूप से गूंजती थी।

अध्याय दो

शीतकालीन रेखा का निर्माण हो रहा है
नवंबर का मतलब था सर्दियों की छुट्टियां, और मेरी जिंदगी कसौली और मसूरी के बीच ही सिमटती थी। मसूरी के बोर्डिंग स्कूल में, हमारे ब्लेज़र या कार्डिगन पर छोटे-छोटे कागज़ के कैलेंडर लगे होते थे, उम्मीद के छोटे-छोटे टुकड़े जिन्हें हम एक-एक करके फाड़ते थे। हर दिन बीतने के साथ सर्दी का मौसम नज़दीक आता जाता था, और घर जाने के ख्याल से मेरा दिल खुशी से उछल पड़ता था। अपने ओवरकोट पहने हुए, हम स्कूल के मैदान से नीचे दूर तक फैले देहरादून को देख सकते थे, जो शाम की ढलती रोशनी में नहाया हुआ था। जैसे ही सूरज नारंगी और सुनहरे रंगों में ढलने लगा, हमने अपने ऊनी स्कार्फ के बीच से धीरे-धीरे गाया, "सर्दियों की कतार बन रही है—हम घर जा रहे हैं, अलविदा..." मेरे अंदर एक शांत रोमांच दौड़ गया—भावनाओं का मिश्रण: दोस्तों और स्कूल से बिछड़ने का दुख, और परिचित चेहरों और गर्माहट में घर लौटने की खुशी।
आखिरकार वो दिन आ ही गया। हम कंबल ओढ़े, धड़ाधड़ सामान लिए, गले में डोरी से बंधी चाबियां लटकाए, और डिब्बों में हंसी की गूंज के बीच अंबाला जाने वाली ट्रेन में सवार हुए। मेरे पिताजी स्टेशन पर हमारा इंतजार कर रहे होंगे, और हम उनकी जीप में बैठकर घुमावदार सड़क से होते हुए कसौली तक जाएंगे।
अगली सुबह मुझे जाने-पहचाने चेहरे दिखाई दिए—मेरे पहाड़ी दोस्त और पड़ोसी मुस्कुराते हुए रास्ते पर चढ़ रहे थे। कसौली ने मेरा ऐसे स्वागत किया मानो मैं कभी दूर गया ही न हो। माँ ने बरामदे से हँसते हुए मुझे आवाज़ दी और कहा कि जाओ और उन्हें गले

लगा लो। हम एक-दूसरे से ऐसे लिपट गए जैसे खोए हुए टुकड़े अपनी जगह लौट आए हों—गर्मजोशी से, साँस फूलते हुए, फिर से अपनापन पाकर खुश।
ठंड का सामना करना
नवंबर की कड़ाके की ठंड शुरू होते ही मैंने आखिरकार गर्म कपड़े पहनना शुरू किया—ज़्यादातर इसलिए क्योंकि मेरे माता-पिता ने ज़ोर दिया था। तब तक मैं सिर्फ़ कमीज़ और सूती पैंट पहनकर घूमता था, मानो हवा का झोंका महसूस ही न हो रहा हो। नीचे गाँव के मेरे ज़्यादातर पहाड़ी दोस्त, जो हर शाम मेरे साथ खेलते थे, नंगे पैर थे। ठंड उन्हें ज़रा भी परेशान नहीं करती थी, और किसी तरह उनका साहस मुझमें भी आ गया।
बहती नाक और कांपते हाथों के बावजूद, मुझे ठंड की ताजगी अच्छी लग रही थी। उसमें कुछ शुद्धता और स्फूर्ति थी—मैदानों की उस ठंड से बिल्कुल अलग जो हड्डियों तक जम जाती है। पहाड़ों की हवा जीवंत, चुस्त और सच्ची लग रही थी, मानो उसमें पहाड़ों की साँस समाई हो।
जब पाला ने कार्यभार संभाला
हर सुबह, कसौली एक नाजुक सफेद चादर के नीचे जाग उठता था। हर चीज़ पर पाले की एक पतली परत जमी होती थी—छतों, रेलिंगों, चीड़ की पत्तियों और घास की पत्तियों पर, जो पहली किरण में चूर्णित कांच की तरह चमकती थीं। रात भर ओस जम जाती थी, जिससे पहाड़ी ढलानें चांदी के जगमगाते खेतों में तब्दील हो जाती थीं।
पानी भी बहना बंद हो गया था। ठंडी और शांत पड़ी पाइपें रात भर जम कर जम गई थीं। मेरी माँ पुकारती, “आग जलाओ!” मैं ठंड में हाँफते हुए जल्दी से बाहर जाता और लकड़ी और कागज़ लेकर मुख्य पाइप के पास घुटनों के बल बैठ जाता। जैसे ही कागज़ और लकड़ी में आग लगती,

हल्की चटकने की आवाज़ सन्नाटे को तोड़ देती और धीरे-धीरे— अद्भुत रूप से—पानी फिर से बहने लगता, कलकल करता हुआ, जीवंत और ठंडी हवा में गर्म।
आग की गर्माहट मेरे हाथों पर स्वर्ग जैसी लग रही थी। मैं वहीं खड़ी होकर लपटों को नाचते और धुएं को सुबह की शांत हवा में उठते देखती रहती, तभी माँ की आवाज़ ठंडी हवा में गूंजती सुनाई देती— नरम लेकिन दृढ़, शांत पहाड़ियों के पार से—“अंदर आ जाओ, वरना तुम्हें सर्दी लग जाएगी।”
उन बर्फीली सुबहों ने मुझे जल्दी उठना और बिस्तर से बाहर निकलना सिखाया, भले ही मेरा मन कंबल के नीचे ही रहने को तड़प रहा हो। उन्होंने मुझे दिखाया कि कभी-कभी गर्माहट को जगाना पड़ता है, और जो चीज़ जमी हुई सी लगती है, वह भी समय के साथ फिर से जीवंत हो उठती है। और उस धीमी गति से लौटती गर्माहट में, पहाड़ियाँ मानो फिर से साँस लेने लगीं।

अध्याय तीन

पहली बर्फबारी
फिर अचानक ही पहली हिमपात हो उठी। एक दिन आसमान एकदम शांत और स्थिर था, अगले दिन नरम बर्फ के टुकड़े धीरे-धीरे और अनिश्चित रूप से गिरने लगे—जैसे हवा में उड़ते पंख। मुझे वह अजीब सन्नाटा याद है; यहाँ तक कि पक्षी भी मानो बीच हवा में रुक गए हों।
मैं दौड़कर बरामदे में जाता और रेलिंग, छतों और चीड़ की पत्तियों पर बर्फ के टुकड़े जमते देखता, जो कुछ ही मिनटों में सब कुछ सफेद कर देते थे। घर के बाहर की काली तारकोल वाली सड़क भी बर्फबारी में गायब हो जाती थी—अब एक मुलायम सफेद पट्टी की तरह, साफ और नई सी दिखती थी।
मेरी आँखों के सामने दुनिया बदल गई। जाने-पहचाने रास्ते धुंधले और अस्पष्ट हो गए, कदमों की आहट धीमी हो गई, और हवा में सन्नाटा छा गया, मानो पहाड़ खुद फुसफुसा रहे हों। हर आवाज़ दूर से आती हुई प्रतीत हुई—यहाँ तक कि पेड़ों की सरसराहट भी बर्फ़बारी के बीच एक याद की तरह सुनाई दी।
यह जादुई था, लगभग पवित्र सा—मानो स्वयं शहर ने गिरती बर्फ के नीचे श्रद्धापूर्वक अपना सिर झुका लिया हो।
सर्दियों की रेखा अब अदृश्य हो गई थी क्योंकि रात होते ही बर्फबारी और बादलों ने क्षितिज को ढक लिया था, और मैं कंबल में लिपटा हुआ पहाड़ों से आती हवा की आवाज़ सुन रहा था। हवा का हर झोंका पाले का वादा फुसफुसा रहा था, छतों और चीड़ के पेड़ों पर चुपचाप जमने वाले बर्फ के टुकड़ों का। मेरा मन भटक रहा था, ठंडी धरती पर बर्फ के पहले स्पर्श की कल्पना कर रहा था, सर्दियों की

हवा की ताजगी भरी खुशबू की, और पहले बर्फ के टुकड़ों के गिरने के बाद आने वाली कोमल खामोशी की।
और फिर, मानो पहाड़ों ने अब तक कोई रहस्य छिपा रखा हो, यह शुरू हुआ।
आसमान से बर्फ के छोटे-छोटे सफेद कण नाचते हुए नीचे आ रहे थे, पंखों की तरह नाजुक, सड़क की बत्तियों की हल्की रोशनी में चमकते हुए। मैंने अपना चेहरा खिड़की के शीशे से सटा दिया, मेरी सांसों से शीशा धुंधला हो गया, और मैंने दुनिया को बदलते हुए देखा। छतें, चीड़ की डालियाँ, अस्पताल के नीचे के सूखे रास्ते—सब कुछ सफेद बर्फ की एक नाजुक चादर से ढका हुआ था, शांत और शुद्ध। मौसम की पहली बर्फ आ चुकी थी, ठीक वैसे ही जैसे हमेशा आती है—सटीक और जादुई।
बाहर, कसौली स्तब्ध था। बर्फ के भार से टहनियों के चटकने की हल्की सी आवाज़ हवा में गूंज रही थी। हवा ठंडी थी, पहले से कहीं ज़्यादा तीखी, चीड़ और पाले की महक से भरी हुई। हर बर्फ का टुकड़ा धीरे से जम रहा था, मानो आसमान से कोई फुसफुसाहट हो, जब तक कि दुनिया सफेद, शांत और समय के ठहराव में न सिमट गई।
मैं अपनी खुशी को मुश्किल से रोक पा रहा था। बूट पहने, ऊनी कपड़े कसकर ओढ़े, मैं बर्फ में उतर गया, हर कदम बर्फ की साफ चादर पर एक स्पष्ट छाप छोड़ रहा था। मेरे नीचे ताज़ी गिरी बर्फ की चरमराहट, उंगलियों और गालों में जमती ठंडक—यह रोमांचकारी था, मानो सर्दियों का उत्सव हो।
फिर आवाजें आने लगीं।
वुड कॉट स्थित नीचे वाले घर से आश्चर्य से भरी एक चीख सुनाई दी।
नर्सों के छात्रावास के पास से एक और आवाज गूंजी - सफेद धुंध के बीच से स्पष्ट और खिलखिलाती हुई।

एक तीसरी आकृति हमारे घर के ऊपर मुख्य सड़क से उठी - तेज, उत्तेजित, जिसे नजरअंदाज करना असंभव था।
हमने एक-दूसरे को जवाब दिया, हमारी आवाज़ें बर्फ़बारी के बीच खुशी के धागों की तरह गूंज रही थीं—हम कुछ मांग नहीं रहे थे, बस बर्फ़ के अद्भुत नज़ारे को साझा कर रहे थे। देखते ही देखते हम एक-दूसरे से मिलने के लिए दौड़ पड़े, हमारे कदमों के निशान आपस में मिल गए, एक हो गए और उसी नरम सफ़ेद बर्फ़ में गायब हो गए— बर्फ़ ने हमें एक-दूसरे तक पहुँचने से बहुत पहले ही मिला दिया था।
दिसंबर का जादू, सर्दियों का चरम: पहली बर्फ़बारी। लंबा इंतज़ार, उम्मीद, आग, सर्दियों की लंबी कतार—सब कुछ इसी पल के लिए था। और अब, पहाड़ सफ़ेद चमक रहे थे, अस्पताल शांत आश्चर्य से घिरा हुआ था, और रात खामोश, पवित्र और परिपूर्ण थी।
शांत रात
हम घर के अंदर आग से गर्म कमरे में दुबके बैठे थे, कसौली में जल्द ही होने वाली बर्फबारी का इंतज़ार कर रहे थे। हर साल ठीक 24 दिसंबर को आधी रात के समय बर्फ के पहले टुकड़े गिरने लगते थे। 25 दिसंबर को पूरी रात बर्फ ही बर्फ थी, क्रिसमस का दिन—ईसा मसीह का जन्म। बाहर, दुनिया एकदम शांत और स्थिर हो गई, मानो पहाड़ भी आश्चर्य से अपनी सांस रोक रहे हों।
अचानक, पवित्र रात्रि के गीत मेरे कानों में गूंजने लगे:
“शांत रात, पवित्र रात। सब शांत है, सब उज्ज्वल है। उस कुंवारी के चारों ओर, माँ और बच्चा। पवित्र शिशु, कितना कोमल और सौम्य। स्वर्गिक शांति में सो जाओ… सो जाओ, स्वर्गिक, स्वर्गिक शांति में सो जाओ।”

हल्की सी खुशबू, गिरती बर्फ की धीमी सरसराहट, सफेद बर्फ के टुकड़ों पर पड़ती हल्की सी रोशनी और पैरों के नीचे बर्फ की हल्की चरमराहट। उस पल कसौली मानो स्वर्ग और धरती के बीच झूल रहा था, और हम उसके शाश्वत जादू के साक्षी बनने के लिए भाग्यशाली थे।
बर्फ का झरना
फिर अचानक, बर्फ के टुकड़ों की मात्रा बढ़ गई। दृश्यता लगभग न के बराबर हो गई। ऐसा लगा मानो कसौली पर बर्फ का एक सफेद पर्दा डाल दिया गया हो। सब कुछ शांत और स्थिर था, सिवाय जमीन पर गिरते ताजे बर्फ के टुकड़ों की हल्की, लगातार सरसराहट के — “स्सस्सस्सस्सस्स…”।
बर्फ के टुकड़े ऐसे गिर रहे थे मानो कोई आसमान से रुई से भरे थैले खाली कर रहा हो—नरम, सूखे और बर्फीले—आसपास के जंगलों, झाड़ियों और छतों को धीरे से छूते हुए। हम उन्हें अपने फैले हाथों में थाम सकते थे, ऊपर से गिरती उस कोमलता को महसूस कर सकते थे। अंधेरा पहाड़ियों को घेरे हुए था, फिर भी हर टुकड़ा झिलमिला रहा था—कभी बरामदे की रोशनी में तो कभी किसी पुरानी एवररेडी टॉर्च की रोशनी में। काली रात सफेद हो गई थी; हर परछाईं नरम पड़ गई, हर आकृति धुंधली हो गई, मानो दुनिया बर्फ में समा गई हो। बर्फ एक झरने की तरह गिर रही थी, एक शांत संगीत की तरह, दुनिया को बदल रही थी। खरबों बर्फ के टुकड़े ज़मीन पर गिरे, और एक हल्की सी सरसराहट की आवाज़ निकाली — “स...
“वाह!” हम रात में खुशी से चिल्ला उठे, एक सच्ची सफेद रात को देखकर हम बेहद उत्साहित थे। हमारे घर एक दूसरे से काफी दूर थे, इसलिए हमारी चीखों से किसी को कोई परेशानी नहीं हुई—बर्फीली रात में शुद्ध, असीम आनंद।

आधी रात को बर्फबारी
25 दिसंबर की आधी रात को बर्फबारी होना हमारे लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, क्योंकि हम 60 और 70 के दशक में कसौली में पले- बढ़े थे। हम अपनी घड़ियों का समय देखते थे, और ठीक 12 बजे—वाह— शांति छा जाती थी। हवा का कोई झोंका नहीं। पत्तों का हिलना भी नहीं। सब कुछ स्थिर। फिर, जैसे ही सेकंड की सुई टिक-टिक करती, आसमान से बर्फ गिरने लगती। रुई जैसे मुलायम बर्फ के टुकड़े गिरने लगते, पहले धीरे-धीरे, फिर तेज़ होकर, पूरे शहर को ढक लेते।
हर सुबह, कसौली एक नाजुक सफेद चादर में लिपटा जाग उठता था। हर चीज़ पर पाले की एक पतली परत जमी होती थी—छतों, रेलिंगों, चीड़ की पत्तियों और घास की पत्तियों पर, जो पहली किरण में चूर्णित कांच की तरह चमकती थीं। रात भर ओस जम गई थी, जिससे पहाड़ियाँ और ढलानें चांदी के जगमगाते मैदानों में तब्दील हो गई थीं। और फिर, जब असली बर्फ गिरी, तो यह परिवर्तन और गहरा हो गया। बर्फ के पहले टुकड़े छूते ही पिघल गए, जिससे ज़मीन ठंडी हो गई, और जल्द ही परत मोटी हो गई। सुबह तक, सड़कें, छतें, पेड़—सब कुछ—एक नरम सफेद चादर से ढका हुआ था। हम जैकेट, विंडचीटर, दस्ताने और मंकी कैप पहनकर बाहर निकल पड़े। बर्फ हमारे हाथों में नरम लेकिन कुरकुरी थी, और कसौली मानो पुनर्जन्म ले चुका था—शहर का हर इंच, हर पेड़, हर छत सफेद बर्फ से ढकी हुई थी। पक्षी गायब हो गए थे, खोखले पेड़ों में छिपे हुए या उड़ गए थे; तोते चुपचाप पुराने चीड़ के तनों में दुबक गए थे; शहर में सन्नाटा छा गया था, जिसे केवल हमारी हंसी और गहरी बर्फ में नए रास्ते बनाते कदमों की कुरकुरी आवाज़ ही तोड़ रही थी। नवंबर में जमा किए गए चीड़ के शंकु, लकड़ी और कोयले को अब आग को गर्म करने के लिए बाहर निकाला जाएगा।

चौथा अध्याय

Kasauli Under Snow
मुझे वो सर्दी याद है जब कसौली पूरी तरह सफेद हो गया था।
जिन ढलानों पर हम कभी धूप में दौड़ा करते थे, वे अब बर्फ से ढकी खामोश थीं, हर जाना-पहचाना कोना बदल गया था। छतें, रेलिंग, रास्ते और चीड़ के पेड़ों की कतारें—सब कुछ ऐसी खामोशी में डूबा हुआ था मानो समय ही धीमा हो गया हो। हवा में ताजगी थी, रोशनी कम थी और आवाज़ भी अलग तरह से सुनाई दे रही थी। हमेशा अपनी लय में शांत रहने वाला यह कस्बा अब मानो थम सा गया था—उसका दिल अब भी धड़क रहा था, लेकिन बर्फ की सफेदी के नीचे धीरे से।
ऊपरी और निचला मॉल
Kasauli had two main divisions.
जीवन अपर मॉल और लोअर मॉल के इर्द-गिर्द घूमता था—ये स्थान कई बाहरी लोगों के लिए लगभग "पहुँच से बाहर" थे। अपर मॉल पर, रेलिंग के सहारे टहलते हुए एक तरफ दूर तक फैले पहाड़ों का मनोरम दृश्य देखा जा सकता था। एक पत्थर के चबूतरे पर बने एक संकेतक पर लोहे की डिस्क पर हिमालयी पर्वतमालाओं और चोटियों के नाम खुदे हुए थे।
हिमपात के दौरान, चबूतरे से बर्फ़ हटा दी जाती थी ताकि शिमला की रूपरेखा धुंधली सी दिखाई दे सके—क्षितिज पर धुंधली सी, बर्फ़ की सफेदी में जमी हुई। ऊपरी मॉल पर, रेलिंग हल्की धूप में चांदी की तरह चमक रही थीं। हिमालय की चोटियों के नाम खुदे हुए लोहे के डिस्क वाला पुराना संकेतक ताज़ा बर्फ़ से ढका पड़ा था। कभी-कभी, हम बर्फ़ को थोड़ा सा हटाते थे ताकि नाम फिर से पढ़ सकें—सफेद शिमला क्षितिज पर धुंधली सी दिखाई दे रही थी, बर्फीली चमक में

उसकी रूपरेखा अस्पष्ट थी। पहाड़ी पर बहने वाली हवाएँ ठंडी और शुष्क थीं, खुली ढलानों की ठंडक और उड़ती बर्फ़ की चुभन लिए हुए। हवा में कोई गंध या रंग नहीं था—बस सफेदी, सन्नाटा और पहाड़ियों पर सर्दियों का तीखा स्पर्श।
समय का हिसाब रखने और बारिश मापने के लिए इस्तेमाल होने वाली धूपघड़ियाँ और वर्षामापी यंत्र अब बर्फ के नीचे निष्क्रिय पड़े थे—एक ऐसे शहर की खामोश याद दिलाते हुए जो ठहर गया था, लेकिन भुलाया नहीं गया था। हमारे नीचे, चंडीगढ़ के मैदान दूर-दूर तक फैले हुए थे। सर्दियों में भी, सूर्यास्त के समय क्षितिज नारंगी रंग का हो जाता था, और सूरज धुंधली पहाड़ियों के पीछे आग जैसी चमक बिखेरता हुआ डूबता था। ठंडी हवा हवा को चीरती हुई तेज़ी से बहती थी, अपने साथ पाले की सूखी महक और वह निर्मल, क्रिस्टल जैसी स्पष्टता लिए हुए जो केवल सर्दियों में ही मिलती है।
रेलिंग और चबूतरे के किनारों पर बर्फ जमी हुई थी, जहाँ भी सूरज की रोशनी पड़ रही थी, वहाँ छोटे-छोटे क्रिस्टल चमक रहे थे। ताज़ी बर्फ के भार से चीड़ की सुइयाँ झुकी हुई थीं, कांच के टुकड़ों की तरह जगमगा रही थीं। बर्फ से ढके रास्तों पर हर कदम एक साफ सफेद निशान छोड़ रहा था, जो धीरे-धीरे उड़ती बर्फ की परतों से फिर से ढक जाता था।
नीचे, लोअर मॉल में चहल-पहल धीमी गति से चल रही थी। पत्थरों की मुंडेरें उन रास्तों के किनारे बनी हुई थीं जहाँ स्थानीय लोग इकट्ठा होकर एक-दूसरे का अभिवादन और कहानियाँ सुना रहे थे। सिर पर पोमपॉम वाली टोपियाँ पहने बच्चे बर्फीले रास्तों पर दौड़ते और फिसलते हुए जा रहे थे, उनकी हँसी ठंडी हवा में गूंज रही थी।

उनके दस्ताने गीले थे, और उनके स्कार्फ रंग-बिरंगे झंडों की तरह उनके पीछे लहरा रहे थे।
कुछ सतर्क पर्यटक इधर-उधर घूमते रहे, लेकिन कसौली बाहरी लोगों के लिए लगभग बंद ही रहा—हिमालय की तलहटी में बसा एक आत्मनिर्भर, अनोखा कस्बा। सामान्य परिस्थितियों में, बस स्टॉप से हाथ से खींचे जाने वाले बड़े और मजबूत रिक्शा चलते थे, जिनमें लोग पत्थरों पर ज़ोर लगाकर यात्रियों को ऊपरी मॉल तक ले जाते और फिर निचले मॉल तक वापस लाते थे। लकड़ी के डंडे पत्थरों पर लयबद्ध ढंग से घिसते थे, चमड़े के हार्नेस चरमराते थे—जो कस्बे की धड़कन की तरह थे। लेकिन बर्फ के नीचे वे शांत पड़े थे, मानो बर्फ की सफेदी ने उनके रोज़मर्रा के काम को रोक दिया हो। रिक्शा की सीटों और डंडों पर बर्फ जम गई थी, मानो वे जमी हुई मूर्तियाँ हों जो वसंत का इंतज़ार कर रही हों। उन्हें चलाने वाले लोग घर के अंदर आग के पास बैठकर खुद को गर्म कर रहे थे। कुछ उड़ते हुए बर्फ के टुकड़े सख्त चमड़े पर गिरे और धीरे-धीरे पिघलकर पानी की छोटी-छोटी बूंदों में बदल गए।
बाजार
बाजार, जो आम तौर पर साफ-सुथरा और चहल-पहल से भरा रहता था, बर्फ में एकदम शांत था। दुकानें बंद थीं, मेरे पिता की निगरानी में साफ-सफाई का पूरा ध्यान रखा जा रहा था ताकि सर्दियों में भी स्वच्छता बनी रहे, जबकि संकरी पत्थर की गलियां बर्फ की मोटी चादर से ढकी चमक रही थीं। लाल रंग से रंगे पुराने लोहे के लेटरबॉक्स सड़क के किनारे बर्फ से ढके खड़े थे। आग बुझाने के लिए पानी की नलियां जमी हुई जमीन से बाहर निकली हुई थीं, मानो खामोश पहरेदार हों।

आम दिनों में, एक बाल काटने वाला घर-घर जाकर बाल काटता था, सब्जी और मिठाई की दुकानें गुलजार रहती थीं, और एक आदमी नाश्ते (काबली चना, मूंगफली या चिप्स) के साथ बैठा रहता था और चूल्हे जलाकर मूंगफली को भूनता रहता था। हम 25 पैसे (चवन्नी) या 50 पैसे (अठान्नी) में ये मूंगफली खरीदते थे, सिनेमा हॉल में जाते समय उनके हाथों में शंकु के आकार के कागज हल्के से गर्म होते थे और हम हॉल के अंदर बैठकर उन्हें खाते थे।
बाज़ार से कुछ ही दूरी पर स्थित सिनेमाघर सप्ताहांतों में गुलज़ार हो उठता था; पुराना प्रोजेक्टर गड़गड़ाता और सरसराता हुआ स्क्रीन पर झिलमिलाती छवियाँ बिखेरता था, और बाहर से चीड़ और लकड़ी के धुएँ की खुशबू अंदर आती रहती थी। लेकिन अब, शहर बर्फ से ढका होने के कारण, विक्रेता घरों के अंदर ही रहे, कड़ाके की ठंड ने व्यापार को ठप कर दिया, और सिनेमाघर की गर्माहट और शोर भी बर्फ की सफेद खामोशी में खो गया।
बर्फ के बीच जीवन
सूरज की रोशनी में हमेशा की तरह दिखने वाला यह कस्बा पूरी तरह बदल गया था। छतें सफेद चमक रही थीं, कुछ गाड़ियाँ बर्फ में छिपी हुई थीं, और चर्च—जिसका शिखर पाले से ढका हुआ था—क्रिसमस कार्ड की किसी तस्वीर जैसा लग रहा था, उसका सफेद शिखर सन्नाटे में हल्का-हल्का प्रतिबिंबित हो रहा था। रंगीन कांच की खिड़कियों पर हल्की धूप पड़ रही थी, जिससे बर्फ पर रंग के छोटे- छोटे टुकड़े बिखर रहे थे। हवा चलने पर लकड़ी के दरवाजे चरमरा रहे थे, और उनकी आवाज़ हवा में एक कोमल धड़कन की तरह गूंज रही थी। बर्फ से सख्त हो चुके रास्तों पर कदमों की आवाज तेज़ सुनाई दे रही थी, और हर आवाज़—देवदार की शाखाओं की सरसराहट, एक अकेली

चिड़िया की चहचाहट, जूतों की रगड़—खामोशी में और भी तेज़ सुनाई दे रही थी।
बर्फ के टुकड़े आलस से उड़ रहे थे, दस्तानों, स्कार्फों और हाथ से खींचे जाने वाले रिक्शा के डंडों से चिपक रहे थे, ठंड में गायब होने से पहले नाजुक, क्षणभंगुर पैटर्न में जम रहे थे। मैंने हिम्मत जुटाकर अपर मॉल के पॉइंटर प्लेटफॉर्म तक पैदल चलकर जाने का फैसला किया, डायल पर खुदी चोटियों से बर्फ हटाते हुए दूर के पहाड़ों की एक झलक देखी। शिमला और उसकी पर्वत श्रृंखलाएं सफेदी में धुंधली और जमी हुई सी लग रही थीं, और सूरज की रोशनी में बर्फ छोटे-छोटे क्रिस्टल की तरह चमक रही थी। चूरधार चोटी (चूरी-चांदनी धार) बर्फ से ढकी हुई सफेद थी। बच्चे फिसलते-फिसलते चल रहे थे, उनके दस्ताने गीले थे, स्कार्फ घिसट रहे थे, और वे जमे हुए रास्तों पर संतुलन बनाने की कोशिश करते हुए हंस रहे थे। पर्यटक, जो संख्या में कम और सतर्क थे, इस मनोरम दृश्य को निहारने के लिए रुक गए, उनकी आवाजें संभली हुई, लगभग श्रद्धापूर्ण थीं।
बर्फ की चादर के नीचे, सामान्य जीवन थम सा गया था। हाथ से चलने वाले रिक्शा, विक्रेता, धूपघड़ी, वर्षामापी, सिनेमाघर और बस स्टॉप पर बजने वाला लोकप्रिय हॉर्न—शहर की लय के सभी साधन— बर्फ़ीली चादर के नीचे थम से शांत हो गए थे। फिर भी, कसौली की धड़कन जारी थी: कोमल, स्थिर और बर्फ की चमक के नीचे छिपी हुई, वसंत की गर्माहट का इंतज़ार कर रही थी ताकि वह फिर से जाग उठे। उस सन्नाटे में, मानो समय थम सा गया था। हर छत और चीड़ की डालियाँ बीते सर्दियों की फुसफुसाहट कर रही थीं, हँसी और घर के अंदर सुरक्षित महसूस की गई गर्माहट की। उस सफेद खामोशी के नीचे,

जीवन धैर्यपूर्वक, सहनशील होकर प्रतीक्षा कर रहा था—यह जानते हुए कि एक दिन बर्फ भी स्मृतियों में विलीन हो जाएगी।

अध्याय पाँच

बर्फ से ढका हमारा घर
हमारा घर, जो उस समय टीबी सैनिटोरियम का हिस्सा था, पहाड़ी की ढलान पर मजबूती से खड़ा था। यह ठोस पत्थरों से बना था और इसकी ढलानदार छतें अंग्रेजों द्वारा छोड़ी गई थीं, जो भारी बारिश और बर्फबारी दोनों को झेलने के लिए डिज़ाइन की गई थीं। हाल ही में हुई बर्फबारी के बाद—छह से दस इंच तक बर्फ ने छतों, रेलिंगों और आसपास के चीड़ के पेड़ों को ढक दिया था—बादलों से घिरे आसमान के नीचे टिन की छतें हल्की-हल्की चमक रही थीं, जिससे एक नरम, धूसर-सफेद रोशनी हर कोने में एक शांत सन्नाटे को भर रही थी। टहनियाँ और चीड़ की सुइयाँ ताज़ी बर्फ में धँसी हुई थीं, जिससे आँगन में नाजुक क्रिस्टलीय आकृतियाँ बन रही थीं। अंदर, मजबूत लकड़ी के बीम छत को सहारा दे रहे थे, जिससे ठंड अंदर नहीं आ रही थी, जबकि सादे सफेदी किए हुए कमरे सागौन के फर्नीचर की चमकदार रोशनी से गर्म थे। फर्श पर मोटे ऊनी कालीन बिछे थे, खिड़कियों पर भारी पर्दे हवा के झोंकों को रोक रहे थे, और गर्म कपड़े— स्वेटर, ऊनी स्कार्फ, दस्ताने—बाहर जाने के लिए तैयार लटके हुए थे।
पेड़ों के तने, घरों की दीवारें और बिजली के खंभों को छोड़कर सब कुछ सफेद था।
कुछ बिजली के तारों पर भारी बर्फ जमी हुई थी—ऐसा लग रहा था मानो बर्फ से ढके तार सड़कों के ऊपर से गुजर रहे हों।
उन पलों में, जब पहाड़ियों पर सन्नाटा छा जाता था और हवा भी थम सी जाती थी, पूरा शहर मानो समय में ठहर सा जाता था। गिरता हुआ हर बर्फ का टुकड़ा दुनिया की रफ़्तार को थोड़ा और धीमा कर देता था

— जब तक कि अंत में केवल यादों की कोमल चमक और बर्फ के नीचे दबी हुई जीवन की हल्की गूंज ही शेष न रह जाती, मानो फिर से जागने की प्रतीक्षा कर रही हो।
खिड़कियों से हमने देखा कि लंगूर गायब थे। बाहर के पेड़ बर्फ से लदे हुए, शांत और स्थिर खड़े थे। लंगूर नीचे की पहाड़ियों में चले गए थे और बर्फबारी के बाद ही लौटेंगे। उनकी अनुपस्थिति और जीवन के लिए उनका मौन संघर्ष मुझे घने जंगल की याद दिलाता था— कठिनाइयों में भी जीवन के बने रहने की याद—और हमारे घर की गर्माहट किसी चमत्कार से कम नहीं थी।
दरवाजे पर लटके तापमान मापने वाले यंत्र ने हमारा ध्यान खींचा; पारा शून्य से नीचे गिर चुका था। हर गिरता हुआ डिग्री अंदर की गर्माहट और दहलीज के बाहर मंडराती ठंड के बीच के अंतर को और भी तीव्र कर रहा था।
सुबह होते-होते घर तक जाने वाली सड़क गायब हो चुकी थी। बर्फ की मोटी परत जमी हुई थी, जिसने माँ के दफ्तर के पास से होते हुए अस्पताल की ओर जाने वाली ढलान को समतल कर दिया था। जो रास्ता कभी जाना-पहचाना था, अब बस एक धुंधला सा रास्ता बनकर रह गया था। मैंने ऊनी मोज़े पहने, फिर भारी गमबूट—कठोर, ठंडे, अनिच्छा से। एक कोट, एक टोपी जिसे मैंने नीचे तक खींच रखा था। बाहर, सन्नाटा छा गया। न कोई पक्षी, न कोई आवाज़। बस बर्फ के जमने की हल्की सी चरमराहट सुनाई दे रही थी।
सूखी ज़मीन पर कुदाल से एक चटकने की आवाज़ आई। फिर फावड़ा चला, खुरचता, उठाता, धकेलता हुआ। हर हरकत से बांहें जल रही थीं; हर सांस हल्की फुहारों के साथ निकल रही थी। बर्फ सरसराती और खिसकती हुई किनारों पर जमा होती गई, और धीरे-धीरे एक संकरा रास्ता दिखाई देने लगा—सफेद ज़मीन को चीरता हुआ काला रास्ता।

अंदर, मेरी छोटी सी दुनिया मेरा इंतजार कर रही थी।
मेरी पैडल कार, वो छोटी जीप जिसे मैं आंगन में चलाता था, मेरी साइकिल और शिमला के लक्कड़ बाजार से लाई गई लकड़ी की खिलौना ट्रेन—ये सब अब घर के अंदर रखे हुए थे, मानो पुराने दोस्त बर्फ से बचने के लिए कतार में खड़े हों। वे खेलने से ज़्यादा आराम कर रहे थे, खामोश होते हुए भी मौजूद थे, मेरे बचपन के टुकड़े सर्दियों में भी मेरे करीब थे।
घर के अंदर, गर्माहट और जीवन चलता रहा—सीखें मिलीं, कहानियाँ साझा की गईं, हँसी लौ की तरह फैलती गई। और हर बार जब मैं बाहर जगमगाती सफेद दुनिया को देखती, या गर्मी के लिए आग की ओर हाथ बढ़ाती, या ऊनी कपड़े ओढ़ती, तो मुझे पता होता कि मैं एक ऐसे मौसम की यादें संजो रही हूँ जो किसी और मौसम जैसा नहीं था—एक ऐसी सर्दी जिसमें खामोशी और दिल दोनों समाए हुए थे।
हमारी खिड़कियों से, मैं ड्रंबार के मैदानों को हल्की सर्दियों की रोशनी में शांत देख सकता था—कभी चरते घोड़ों से गुलजार, अब शांत, उनके खुरों के निशान जमी हुई घास पर धुंधले दिखाई दे रहे थे। बंदर टोपी, माँ द्वारा सिले ऊनी दस्ताने, मफलर और गमबूट हमारे कवच बन गए थे, जब हम घर की आरामदायक गर्माहट में वापस आने से पहले थोड़ी देर के लिए बाहर निकलते थे।
हमारी खिड़की से दृश्य
सर्दी का एक अनोखा तरीका था जिससे सब कुछ थम जाता था—ध्वनि, हलचल, यहाँ तक कि विचार भी। सुबह की शुरुआत शांति से होती थी, खिड़की के पास खड़े होकर बस बाहर की दुनिया को देखते हुए, मानो वह दुनिया सिर्फ हमारे लिए थम गई हो।
हमारी खिड़कियों से ड्रमबार के घोड़े के अस्तबल साफ़ दिखाई दे रहे थे, उनकी लकड़ी की बीम बर्फ़ की हल्की परत से ढकी हुई थीं,

बढ़ती और नज़रों से ओझल हो जाती। एक ही निशान, अकेला—साफ़, अटूट — जैसे दुनिया के जागने से पहले कोई चुपचाप चला हो। मैं रुककर सोचता कि कौन होगा। कोई पड़ोसी? अस्पताल का कोई कर्मचारी? या बस कोई ऐसा व्यक्ति जिसे बर्फ़ से इतना प्यार था कि वह दूसरों से पहले उसमें कदम रख दे?
सर्दी के मौसम में, कसौली को भीड़ या बातचीत की ज़रूरत नहीं थी — पैरों के निशान लोगों की कहानी बयां करते थे। हर निशान में एक दिशा, एक भार, एक कहानी छिपी होती थी, और मैं उन्हें वैसे ही पढ़ता था जैसे दूसरे लोग चिट्ठियाँ पढ़ते हैं। गहरे निशान का मतलब भारी जूते; हल्के निशान जल्दबाजी या उत्साह का संकेत देते थे। पक्षियों के पदचिह्न बेतरतीब रेखाओं की तरह बिखरे होते थे। कुत्तों के पंजे फूलों की तरह लगते थे। लेकिन अकेला मानव पदचिह्न सबसे रहस्यमय होता था — खामोशी से गुज़रता एक जीवन, जिसे केवल बर्फ में ही देखा जा सकता था।
कसौली एकदम शांत था। न किसी पक्षी की आवाज़, न किसी जानवर की हलचल। चीड़ के पेड़, छतें और पत्थर की गलियाँ बर्फ की एक समान परत के नीचे गायब हो गईं। जंगल, जो आम तौर पर जीवन से गुलजार रहता था, एकदम शांत था, हरियाली सफेद चादर में छिपी हुई थी। कभी- कभार, चीड़ की शाखाओं से बर्फ की एक मोटी परत सरकती, एक अजीब सी सीटी जैसी आवाज़ निकालती, जो कुछ पल के लिए सन्नाटे को तोड़ देती।
हवा मेरे गालों से चुभ रही थी, तीखी और कठोर। न हवा उसे नरम कर पा रही थी, न सूरज उसे गर्म कर रहा था। बर्फ़ पीली और कठोर चमक रही थी, जिससे मेरी आँखें सिकुड़ गईं और पलकें अपने आप नीचे झुक गईं। हर साँस में बर्फ़ और चीड़ की महक थी, जो शांत हवा में घुली हुई थी। रात में, स्ट्रीटलाइट्स बर्फ़ को एक अलौकिक चमक देती

थीं—एक गहरा, मंद सफ़ेद रंग जो जादुई और अजीब सा लगता था, मानो दुनिया ही थम गई हो, अपनी साँस रोके हुए हो।
कुछ सुबह मैं तेंदुए के पदचिह्नों की तलाश करता था - दूधवाले ने नीचे वुड कॉट के पास कुछ तेंदुए देखे जाने की बात कही थी।
उनके साथ ही कौवों और छोटे पक्षियों के हल्के, जल्दबाजी में बनाए गए निशान थे - ताज़ी बर्फ पर बिखरे हुए तीर के आकार के छोटे- छोटे निशान और बिखरी हुई फुर्तीली रेखाएँ, मानो पीछे छोड़े गए संदेश हों।
मैंने अपने जूतों से मजबूती से चिपकी बर्फ की ढेरों को लात मारी, सफेद बर्फ के छोटे-छोटे गुच्छे उछले और फिर वापस अपनी जगह पर गिर गए। हर सावधानी भरा कदम पैरों के नीचे चरमराहट की आवाज करता हुआ सुनसान गलियों में हल्की गूंज बिखेर रहा था।
आखिरकार घर पहुँचकर मैंने अपने ऊनी कपड़ों से बर्फ झाड़ी, ठंड और उत्साह से मेरे गालों में झुनझुनी हो रही थी। घर की गर्माहट, आग की चटक और चीड़ की खुशबू गीले ऊन के साथ मिलकर मुझे एक कोमल आलिंगन की तरह घेर रही थी। रात के खाने से तृप्त और मन हल्का महसूस करते हुए मैं बिस्तर पर लेट गई, मेरे बगल में अंगीठी की गर्म और जगमगाती रोशनी थी। ऊपर दीवार पर बैठी आठ टांगों वाली मकड़ी—जो हमेशा हमारे दैनिक कार्यों की मूक गवाह रहती है— अपनी जगह पर स्थिर होकर देख रही थी। बाहर, कसौली सफेद बर्फ की चादर से ढका हुआ था: शांत, स्थिर, अछूता—एक ऐसी दुनिया जो पूर्ण शांति में डूबी हुई थी, एक और बर्फबारी का इंतजार कर रही थी ताकि वह फिर से जीवंत हो उठे।
और उस सन्नाटे में, मुझे समय धीमा होता हुआ महसूस हुआ—बचपन की गर्माहट और आश्चर्य के क्षण धीरे-धीरे स्मृति में समा गए, जैसे बर्फ धरती पर धीरे से जम जाती है।

अध्याय छह

हिमपात की भविष्यवाणी और अतीत की यादें
कसौली में हमारे प्रवास के दौरान, मौसम की जानकारी प्राप्त करने के एकमात्र साधन रेडियो या दैनिक समाचार पत्र थे—मीडिया अभी अपने शुरुआती दौर में था। लेकिन पहाड़ों के हमारे प्रत्यक्ष अनुभव ने ही हमें सही राह दिखाई। बादलों को देखकर, गालों पर हवा का स्पर्श महसूस करके, या हवा में व्याप्त ताजगी को देखकर, हम जान जाते थे कि हल्की बूंदा-बांदी, बारिश या ओले पड़ने वाले हैं या नहीं।
कसौली में बर्फबारी हमेशा से मुझे आकर्षित करती रही है। समय, सटीकता—यह सब अविश्वसनीय था। हर साल, लगभग घड़ी की सुई की तरह, 25 दिसंबर को, शून्य से नीचे के तापमान में, आसमान से बर्फ बरसने लगती थी। आधी रात को। ठीक 24 तारीख की रात को 12 बजे—लगभग एक-एक सेकंड का अंतर। क्या यह महज़ संयोग था? मुझे नहीं पता था। जलवायु, ऋतुओं का चक्र, मौसम के सभी चक्र—ये सब एक साथ जुड़े हुए, लगभग मानवीय रूप से पूर्वानुमानित प्रतीत होते थे। बारिश या बर्फ हर साल बिल्कुल समय पर आती थी। यहाँ तक कि अगर बर्फ थोड़ी देर से भी गिरती थी, तो कुछ घंटों से ज़्यादा का अंतर नहीं होता था। पहाड़ों का अपना एक कैलेंडर था, और हमने उसे पढ़ना सीख लिया था।
एक सफेद घेरा
बर्फबारी के चलते सब कुछ ठप्प हो गया। कार्यालय, स्कूल और संस्थान नवंबर से ही शीतकालीन अवकाश पर थे, और बस स्टॉप व सार्वजनिक परिवहन पूरी तरह से बंद हो गए। सड़कें बर्फ की मोटी

सफेद चादर से ढकी हुई थीं और सन्नाटा पसरा हुआ था। यहां तक कि बाजार भी पहले कुछ दिनों तक बंद रहा।
यह उत्सवों और आनंद का मौसम था। मन प्रसन्न हो जाता था, हंसी गूंज उठती थी और वातावरण में एक चंचल ऊर्जा भर जाती थी। मैं हमेशा सबसे पहले बाहर दौड़ता था, अपने बंगले के बाहर जमी बर्फ पर अपने पदचिह्न छोड़ने के लिए उत्सुक रहता था। हम झुककर जमीन पर पक्षियों, गिलहरियों या अन्य छोटे जीवों के पदचिह्न ढूंढते थे जो हमसे पहले वहां से गुजरे हों।
कभी-कभी नीचे वाले गाँव से दूधवाला चौंकाने वाली खबर लाता था: एक तेंदुए ने पास ही अपने पैरों के निशान छोड़े थे। यहाँ तेंदुए आम थे। कुछ तेंदुए हमारे घर के पास आ गए थे, और हमने उनके हमले में अपने कुछ कुत्ते खो दिए थे।
तब तक, साफ सफेद बर्फ का एक बड़ा हिस्सा पहले ही खराब हो चुका होगा - कीचड़ से सना हुआ होगा, क्योंकि एक कुत्ता कीचड़ वाले हिस्से से गुजरने के बाद गंदगी को वापस बर्फ पर ले आया होगा। सर्दियों में देशी जानवर
कसौली के मूल रक्षक लंगूर, बर्फ के घने होने पर गायब हो जाते थे — और बर्फ पिघलने और पत्तों के दोबारा उगने पर लौट आते थे। ठंड उन्हें कभी डराती नहीं थी। अक्सर हम उन्हें अपने घने, रोएँदार कोट से बर्फ झाड़ते हुए देखते थे, जिससे बर्फ के सफेद टुकड़े फुर्ती से चारों दिशाओं में उड़ते थे, और फिर वे बर्फ की सफेदी में आगे बढ़ जाते थे।
पक्षियों ने मैदानों में शरण ली और बर्फ पिघलने के बाद ही वापस लौटे। गिलहरियाँ भी गायब हो गईं। कुछ ने पेड़ों के तनों के खोखले हिस्सों में बिल बनाकर अपने घोंसले छिपा लिए; कुछ दीवारों और छतों के बीच की दरारों में घुस गईं। वे सर्दियों के

आने से पहले जमा किए गए भंडार से धैर्यपूर्वक अपना जीवन यापन करती रहीं।
मैं अक्सर चींटियों की बुद्धिमत्ता और उनकी सहज प्रवृत्ति पर आश्चर्यचकित होता था। उनका कोई नेता नहीं था, फिर भी उन्होंने पूरी गर्मी भर भोजन जमा करने और अपने अस्तित्व को सुनिश्चित करने के लिए कड़ी मेहनत की। सर्दियों में, ज़मीन के नीचे सुरक्षित रहकर, उन्होंने अपनी मेहनत का फल भोगा। जी हाँ, सही समय पर की गई मेहनत का फल हमेशा मिलता है।
अगली सुबह, दूधवाले ने हमें बर्फ में तेंदुए के पदचिह्नों के बारे में आगाह किया। वे रात में चुपचाप और आत्मविश्वास से झोपड़ियों के नीचे वाले रास्ते को पार कर गए थे। बाद में, मैंने छोटे-छोटे निशान भी देखे—सफेद बर्फ पर दौड़ते चूहों के बारीक, साफ-सुथरे पदचिह्न। उस जमी हुई खामोशी में भी, जीवन शांतिपूर्वक चलता रहा।
बर्फ़बारी के दिन - कसौली खुशी से झूम उठता है। दिन के समय, बाहर की दुनिया एक विशाल खेल के मैदान में बदल जाती थी। पूरा कसौली जीवंत हो उठता था - बच्चे घरों से बाहर दौड़ते, माता-पिता उन्हें पुकारते, पड़ोसी एक-दूसरे को मुस्कुराते हुए अभिवादन करते। ताज़ी बर्फ़ ने सबको एक ऐसे साझा उत्साह में बांध दिया था जो लगभग जादुई लगता था।
हमारे हाथों के नीचे झटपट बर्फ के पुतले आकार लेने लगे—ताज़ी बर्फ के लोटे शरीर, सिर और टेढ़ी-मेढ़ी मुस्कान का रूप ले रहे थे। टोपी, डंडे और पत्थरों ने हर पुतले को एक अलग पहचान दी, जो सफेद बर्फ के बीच शान से खड़ा था। गलियों में दूसरे परिवार भी ऐसा ही कर रहे थे। एक पुतला यहाँ, दूसरा वहाँ—सरल, टेढ़ा-मेढ़ा और शांत आनंद से भरा हुआ।

फिर वही हुआ जिसका होना तय था—घनी बर्फ की गेंदें हवा में उड़ने लगीं। बच्चे चीड़ के पेड़ों के बीच एक-दूसरे का पीछा करने लगे, छज्जों के पीछे लोटने लगे और नीची पत्थर की दीवारों के पीछे छिपने लगे। चीखें, चिल्लाहटें और हंसी शांत कस्बे में गूंज उठीं, छतों से टकराकर शांत गलियों में गूंजने लगीं। यहां तक कि बड़े भी इधर-उधर मस्ती में शामिल हो गए—मुट्ठी भर बर्फ फेंकने लगे या बरामदों से खुशी जताने लगे।
और इन सबके बीच, ड्यूटी के बाद सैनिटोरियम से लौटती माँ का नज़ारा बेहद खूबसूरत लगता था। अपनी सफेद टोपी, सफेद साड़ी और गहरे नीले रंग के ओवरकोट में—जो वर्दी वह बड़ी शान से पहनती थीं—वह गिरती बर्फ में से होकर घर आती थीं। मैं हमेशा उन पर बर्फ के गोले फेंकने की कोशिश करता, खुद को रोक नहीं पाता था। वह बचने का नाटक करतीं, आधा मुस्कुरातीं, आधा डांटतीं, लेकिन असल में वह कभी नहीं चाहती थीं कि मैं रुकूँ।
खुशी की लहरें उमड़ रही थीं, शरारत का रोमांच और बर्फीले रास्तों पर फिसलने का थोड़ा सा डर सब मिलकर एक अद्भुत एहसास पैदा कर रहे थे। हम बर्फ में लोट-पोट हुए, ढेरों में गिरे, चीखे- चिल्लाए, अपनी आस्तीनों से बर्फ के टुकड़े झाड़े और फिर अगले स्नोबॉल मुकाबले को जीतने के पक्के इरादे से वापस दौड़ पड़े। जब कड़ाके की ठंड पड़ने लगती थी, तो हम दौड़कर घर लौट आते और अंगीठी के सामने बैठ जाते, जिससे उसकी गर्मी हमारी उंगलियों और गालों को गर्म कर देती थी।
दोपहर होते-होते, जब रोशनी हल्की हुई, तो बर्फ एक बार फिर धीरे से चमक उठी। हमारी हंसी की गूंज ठंडी हवा में गूंजती रही, धीरे- धीरे सन्नाटे में घुलती चली गई—जैसे शहर ने कुछ पल के लिए

गर्मजोशी से मुस्कुराने के बाद फिर से शांत, सफेद खामोशी में डूब गया हो।
कसौली में सन्नाटा पसरा हुआ था। घने चीड़ के पेड़ों से बर्फ धीरे-धीरे गिर रही थी, और खाली सड़कें और बाज़ार ढलते सूरज की हल्की रोशनी में जगमगा रहे थे। जंगल में कहीं दूर से आती सरसराहट की आवाज़ अँधेरे में गूंज रही थी। शहर बर्फ के नीचे सोया हुआ था—शांत, अछूता और एकदम स्थिर।
बर्फ के गोले से लड़ाई – और देखते पहाड़। बर्फ पहले से ही छतों, चीड़ की शाखाओं और पत्थर की सड़कों पर मोटी परत के रूप में जमी हुई थी। यह पिघलने से पहले एक सप्ताह या उससे अधिक समय तक टिकी रही, और उस दौरान एक ही चीज़ हर जगह छाई रही – सफेदी। एक ऐसा चमकीला, इतना चमकदार, इतना झिलमिलाता सफेद रंग कि सूरज की किरणें पड़ने पर आँखों को लगभग चुभने लगती थीं। ज़मीन, पेड़, छतें – हर सतह ऐसे चमक रही थी मानो अंदर से रोशन हो। उस सप्ताह कसौली में हर तरफ सफेदी ही सफेदी थी, एक ऐसी दुनिया जो चमक से जगमगा उठी थी।
एक-दो दिन बाद, हम आखिरकार सैनिटोरियम के दोस्तों और आस-पास के घरों के कुछ बच्चों के साथ बाहर निकले, जिनके माता-पिता कसौली के आसपास के अन्य संस्थानों में काम करते थे। अभिवादन का सिलसिला शुरू हो गया—हाथ मिलाए गए, आवाजें टकराईं, और खुशी की चीखें चमकदार सफेद जमीन पर गूंज उठीं। हवा हमारे गालों को चुभ रही थी, नाकें लाल हो गई थीं, लेकिन इन सब बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता था। मेरा दिल कुछ सरल सवालों से भरा हुआ था: हम बर्फ का ढेर कितना ऊंचा लगा सकते हैं, बर्फ का गोला कितनी दूर तक उड़ेगा, और सबसे तेज कौन दौड़ेगा।

tucked

अपने घर के पीछे पानी की टंकियों की ओर जाने वाला हूँ, मानो कुछ योजना बना रहा हूँ।
बर्फ अब कुरकुरी हो गई थी, पैरों के निशान से पिघलकर कीचड़ बन चुकी जगहों को छोड़कर हर जगह बर्फ जम गई थी। कहीं और चलना एक चुनौती थी, मानो गुरुत्वाकर्षण के साथ एक नाजुक संघर्ष। मैंने मुट्ठी भर नरम, ताज़ी बर्फ उठाई और उसे एक गोले में समेट लिया। मेरी माँ के ऊनी दस्तानों ने ठंड को सोख लिया, जिससे मेरी उंगलियों में बर्फीली जलन होने लगी। लेकिन मैं तैयार थी— शरारत के लिए तैयार, बदला लेने के लिए तैयार, वार करने के लिए तैयार।
वह अस्पताल की एक बुजुर्ग महिला थीं; जिन्हें मैं अच्छी तरह जानता था। मेरे मन में, मैं टेस्ट टीम का तेज गेंदबाज बन गया, बर्फ के गोले को क्रिकेट की गेंद की तरह पकड़े हुए, कलाई को सटीक निशाना लगाने के लिए मोड़े हुए। बर्फ का गोला मेरे हाथ से निकला और ठंडी हवा को चीरता हुआ निकल गया।
धड़ाम। एकदम सटीक निशाना। वह चीख पड़ी, जिससे कुछ बुलबुल चौंककर उड़ गईं। बर्फ से उसकी साड़ी का पिछला हिस्सा भीग गया था और उसकी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई।
“देखो! मैंने तुम्हें ऐसा करते देखा! रुक जाओ… शरारती लड़के! कब सुधरोगे? हे भगवान! देखते रहो… मैं तुम्हारे माता-पिता को इसकी सूचना दे रही हूँ!”
हर शब्द मेरे पिता की डांट का और भी तेज रूप लग रहा था—अधिकार और क्रोध का एक तूफान। मैं जम गया, दिल ज़ोर से धड़क रहा था, डर और अपराधबोध के बीच फंसा हुआ था।

मुझे अपने माता-पिता की लगातार दी जाने वाली सीख याद आई: "भले ही गलती दूसरे की हो, पहले जाकर माफी मांगो।" इसलिए, मैंने वैसा ही किया।
“मुझे बहुत खेद है, चाची,” मैंने कांपती हुई आवाज़ में फुसफुसाया। “मैं अब ऐसा दोबारा नहीं करूंगी!”
मैं सिर झुकाए, हर खिड़की की ओर घबराकर देखता हुआ चुपके से घर लौट आया। काम से लौट रहे हर माता-पिता को देखकर मेरा पेट मरोड़ उठता था। क्या सच में घटना की रिपोर्ट हो चुकी थी? क्या सच में कोई सज़ा मिलने वाली थी?
लेकिन, कसौली में हमेशा की तरह, समय का अपना ही खेल था। बर्फ पिघल गई, और उसके साथ ही उसका गुस्सा भी शांत हो गया।
हमारे जूतों के नीचे बर्फ अभी भी मौजूद है
हमारे जूतों के नीचे की बर्फ़ मानो सजीव थी, हर कदम पर सरसराहट करती हुई, हमारी ऊर्जा को उस वीरान कस्बे में बिखेर रही थी। कसौली हमें देख रहा था, मानो साँस रोके हुए हो—हर चीड़ का पेड़ और छत प्रतीक्षा में जम गई थी, हर गली हमारे छोटे-छोटे नाटकों का मंच बन गई थी। यहाँ तक कि शांत जंगल भी मानो आगे की ओर झुका हुआ था, हर बर्फ़ के गोले, हर लुढ़कने, हर खुशी की चीख को देखने के लिए उत्सुक।
हर सुबह, मैं घर के सामने का रास्ता साफ़ करने के लिए फावड़ा लेकर जाता था ताकि माँ समय पर काम पर पहुँच सकें। हवा एकदम शांत और ठंडी थी, हल्की रोशनी में हमारी साँसें धुएँ की तरह उठ रही थीं। ताज़ी बर्फ़ हल्की और आसानी से खिसकने वाली थी, फावड़े के नीचे छने हुए आटे की तरह मुलायम। लेकिन एक बार जब वह सख्त होकर बर्फ़ बन जाती, तो फावड़े की हर चोट शांत पहाड़ी पर गूँज उठती, झोपड़ियों के बीच हल्की-हल्की गूंजती। मैं उन्हें साफ़ किए हुए

रास्ते पर चलते हुए देखता था, सुबह की सफ़ेद खामोशी में उनके कदमों की आहट अस्पताल की ओर धीमी होती जा रही थी।
असली खतरा एक हफ्ते बाद आया, जब पिघलती बर्फ जम कर कांच जैसी बर्फ बन गई। मैं भी कई बार गिर चुका हूँ—और कभी-कभी, दूर से आती एक अचानक चीख मुझे बताती थी कि कोई और भी गिर चुका है।
माँ को अब भी काम पर जाना होता था। मैं हमेशा शाम 4:30 बजे उनके लौटने का पता लगा लेता था—उनके बूटों की जानी-पहचानी चरमराहट की आवाज़ ज़मीन पर सुनाई देती थी। सुबह-सुबह दूधवाले से भी ऐसी ही आवाज़ आती थी। हम हमेशा उनके कदमों की लय से पहचान लेते थे कि कौन हमारे घर की ओर आ रहा है, उनके बूटों से बर्फ कुचलती हुई। दिन के समय, बाहर की दुनिया एक विशाल खेल के मैदान में बदल जाती थी। पूरा कसौली जीवंत हो उठता था—बच्चे घरों से बाहर दौड़ते, माता-पिता उन्हें पुकारते, पड़ोसी एक-दूसरे को मुस्कुराते हुए अभिवादन करते। ताज़ी बर्फ ने सभी को एक ऐसे साझा उत्साह में बांध दिया था जो लगभग जादुई लगता था।
हमारा ज़्यादातर खेल सैनिटोरियम परिसर के अंदर ही बीतता था। हम उस जगह को अच्छी तरह जानते थे—ढलानें, शॉर्टकट रास्ते, इमारतों के बीच से गुज़रने वाली संकरी पगडंडियाँ। वह हमारा जाना-पहचाना इलाका था, हमारा अपना क्षेत्र, जहाँ हम सहजता और आत्मविश्वास से घूमते थे। हम अपने घर के ऊपर, हवा घर के पार, बाज़ार की ओर बहुत कम जाते थे। चढ़ाई खड़ी थी, सड़कें थका देने वाली थीं, और वहाँ जाने का कोई खास कारण भी नहीं था—हमारी ज़रूरत की हर चीज़ यहीं मौजूद थी।
हमारे हाथों के नीचे झटपट बर्फ के पुतले आकार लेने लगे—ताज़ी बर्फ के लोटे शरीर, सिर और टेढ़ी-मेढ़ी मुस्कान का रूप ले रहे थे। टोपी, डंडे और पत्थरों ने हर पुतले को एक अलग पहचान दी, जो

सीधे खड़े रहना हमारे लिए गर्व की बात थी। गिरना कमजोरी की निशानी थी। इसलिए, मैं जरूरत से थोड़ा सीधा चलता था, खासकर ढलान पर, बूट मजबूती से जमाकर, ताकि लोग मुझे आत्मविश्वास से देखें। मैंने जानबूझकर ऐसा किया—अपनी मर्दानगी साबित करने के लिए।
स्कूल में एक खिलाड़ी, सैनिटोरियम के बच्चों में एक लीडर, मैं उन्हें दिखाना चाहता था कि बर्फ और ढलान से मुझे डर नहीं लगता।
मैंने सामने चिकनी बर्फ का टुकड़ा देखा और सीधे उस पर चल पड़ा, खुद से कहता रहा कि मैं नहीं गिरूंगा।
बर्फ ने धीमी आवाज में जवाब दिया।
मेरे पैर फिसल गए और जैसे ही मेरी पीठ जमी हुई ज़मीन से टकराई, एक तीखी, खोखली सी आवाज़ आई, ठंड ने एक झटके में मेरी सांस रोक दी। एक पल के लिए मैं ज़मीन पर पड़ा रहा, सफेद आसमान को देखता रहा, कान बज रहे थे।
सबसे पहले मैंने अपना सिर घुमाकर देखा कि कहीं किसी ने मुझे देख तो नहीं लिया। किसी ने नहीं देखा था। दर्द से पहले राहत मिली। बर्फ एकदम चिकनी और निर्मल सी पड़ी थी, मानो कुछ हुआ ही न हो। उस दिन पहाड़ियों ने मुझे एक ऐसी बात सिखाई जिसे मैं हमेशा याद रखूंगा—ताकत खुद को साबित करने में नहीं, बल्कि यह जानने में है कि कब ऐसा नहीं करना है।
बर्फ का स्वाद चखना – शरारत और सावधानी लड़ाइयों के बीच, हम ताज़ी बर्फ चखने से खुद को रोक नहीं पाए। मैंने मुट्ठी भर बर्फ अपने मुँह तक उठाई, ठंडक मेरी जीभ पर चुभ गई। मेरी माँ की चेतावनी मेरे दिमाग में गूँज उठी: “इसे मत खाओ, यह अच्छी नहीं है!” फिर भी हम चुपके से एक-दो बर्फ चाटने से खुद को रोक नहीं पाए, शुद्ध बर्फ हमारे होठों पर मीठी सी पिघल गई। कभी-कभी मेरे सीने में अकेलापन सा उमड़ आता था, जब मैं देखता था कि मेरा एक

दोस्त कुछ पल के लिए अलग खड़ा झिझक रहा है। लेकिन हँसी और साथ में खेले गए खेलों ने सबको जल्दी ही वापस अपने बीच खींच लिया।

अध्याय सात

जिज्ञासा, विस्मय और पहाड़
हमारे चारों ओर पहाड़ सफेद चमक रहे थे, चीड़ के पेड़ बर्फ से लदे हुए थे, उसके भार से झुके हुए थे। कभी-कभार, एक शाखा से बर्फ की चादर गिरती, जिससे हवा में एक धीमी सी सीटी की आवाज़ गूंजती, जो हमें चौंका देती और हंसा देती। पक्षी गायब हो चुके थे, जानवर कहीं नज़र नहीं आ रहे थे, और यह कस्बा पूरी तरह हमारा लग रहा था। जिज्ञासा ने मुझे उन कोनों में झाँकने के लिए मजबूर किया जहाँ बर्फ अजीबोगरीब आकृतियों में जम गई थी; विस्मय ने मुझे बर्फीली सतहों पर चमकती धूप को देखने के लिए बीच रास्ते में रुकने पर मजबूर किया; जब मैं लगभग फिसल गया तो डर से मेरा दिल तेज़ी से धड़कने लगा; हर बार जब हम बर्फ के गोले फेंकते हुए टकराते तो खुशी से झूम उठता; और अकेलापन मुझे याद दिलाता कि इस विशाल, सफेद दुनिया में मैं कितना छोटा हूँ।
मुझे ऐसा महसूस हो रहा था मानो कसौली भी हमारे साथ अपनी सांसें थामे बैठा हो, बाहर की खामोशी सिर्फ हमारी हंसी से टूट रही थी। बर्फ मानो सजीव थी, चमक रही थी, हमारे पैरों के नीचे सरक रही थी, मानो हमारी ऊर्जा को वापस हम तक पहुंचा रही हो। जूतों की हर चरमराहट, बर्फ के गोलों की हर फुहार, चीड़ की शाखाओं से आती हर धीमी सीटी, ऐसा लग रहा था मानो हम और शहर आपस में बातचीत कर रहे हों—बच्चों और पहाड़ों के बीच एक साझा रहस्य।
जमी हुई सांसों से लेकर सूरज की रोशनी में खिलते फूलों तक, एक दिन मैंने ज़िद की कि माँ मुझे पिंजोर ले जाएँ। एक दिन पहले ही पहली बर्फ़ गिरी थी—नरम और धीमी, अभी तक वो मोटी सफ़ेद चादर नहीं थी जिसकी मुझे चाह थी—लेकिन इतनी ज़रूर थी कि सैनिटोरियम

जब हम उस शाम बाद में घर लौटे, तो सड़कें बिलकुल वैसी ही थीं जैसी हमने उन्हें छोड़ा था - शांत, अपरिवर्तित, किसी भी नई बर्फबारी से अछूती।
घर वापसी का सफर – थका हुआ, लेकिन खुश एक दिन, मैंने माँ को सरप्राइज देने का फैसला किया। बच्चों को सैनिटोरियम के पास जाने की इजाज़त नहीं थी, लेकिन इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ा। वह हमेशा चेतावनी देती थीं, "डॉक्टर को पता चल जाएगा!" फिर भी, मैं चुपचाप निकल पड़ी, बड़े पानी के टैंक के पास से गुज़री—जो गर्मियों में हमारा सिनेमा देखने का पसंदीदा स्थान होता था—और फिर ढलान से नीचे, डाकघर के पास से गुज़री। सड़क धीरे-धीरे मुड़ती हुई, बर्फ से लदे चीड़ के पेड़ों से घिरी हुई, नीचे अस्पताल की ओर जा रही थी।
सैनिटोरियम बर्फ में आधा ढका हुआ, सन्नाटा पसरा हुआ था, उसके वार्डों में दरवाजों की हल्की चरमराहट और दूर से आती कौवे की कांव-कांव के अलावा सन्नाटा छाया हुआ था। मैं द्वार के पास खड़ा रहा, माँ की नज़र मुझ पर पड़ने का इंतज़ार करता रहा। उनकी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गईं, और मैं लगभग उनकी अनकही आह सुन सकता था, जो धीरे-धीरे एक मुस्कान में बदल गई—आधी चिंतित, आधी खुश। जब उसका काम खत्म हो गया, तो हम साथ-साथ घर की ओर लंबी, फिसलन भरी ढलान पर चढ़ने लगे। बर्फ हमारे दस्तानों, जूतों और टोपियों से चिपकी हुई थी। हर कदम सफेद पगडंडी पर एक गहरा निशान छोड़ रहा था। उसका हाथ थामे, मैंने उसे मुश्किल रास्तों पर चलने में मदद की, और उसके शॉल से बर्फ के टुकड़े झाड़ते हुए उसे सहारा दिया। सड़क की बत्तियाँ चमकती बर्फ पर रोशनी बिखेर रही थीं, और कसौली मानो थम सा गया था—शांत, प्रकाशमान, और ढलते सूरज की रोशनी में जीवंत।

अंदर आते ही हमें गर्माहट का एहसास हुआ। हमने बर्फ झाड़ी, पत्थर के फर्श पर हमारे बूट चरमराए। आग की लपटें कमरे को धुएं और चीड़ की मनमोहक खुशबू से भर रही थीं। माँ ने गर्म दूध डाला, भाप हल्की लहरों की तरह उठ रही थी, और मैं चुपचाप अंदर चली गई, ठंड से मेरे गाल लाल हो गए थे, और मुझे गर्व था कि मैं उन्हें बर्फ में से घर तक लेकर आई थी।
बाहर की खामोशी
बाहर सन्नाटा छाया हुआ था—न पक्षी, न जानवर, न कोई हलचल—सिर्फ़ बर्फ़ की हल्की, फीकी चमक मंद लैंप की रोशनी में प्रतिबिंबित हो रही थी। अंदर, हंसी और बातचीत की हल्की-हल्की आवाज़ें गूंज रही थीं, दोपहर के स्नोबॉल फाइट और चमकती आंखों की गूंज उस आरामदायक रोशनी में मंद पड़ गई थी। दिन समाप्त हो चुका था, बस घर की कोमल गर्माहट, साझा खुशियों की मिठास और कसौली का सफ़ेद चादर में लिपटा शांत जादू ही रह गया था। अपनी खामोशी में भी, यह कस्बा जीवंत लग रहा था, मानो हमारे कदमों के निशान, हमारी हंसी, बर्फ़ पर बने हमारे क्षणिक निशानों को याद रखे हुए हो, और सूरज के लौटने तक उन्हें अपनी स्मृति में संजोकर रखे हुए हो।
शरारतों को याद करते हुए
बर्फ के गोले फेंकने की लड़ाई में छोटे-मोटे जोखिम तो होते ही थे—गीले मोज़े, ठंडी उंगलियाँ, डांट—लेकिन साथ ही आनंद और रोमांच का भी भरपूर अनुभव होता था। तेज़ नज़र वाले बड़े- बुजुर्ग हमारे "दुश्मन" थे, जो हमें पकड़ने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। लेकिन रोमांच, हंसी, दोस्ती की गर्माहट, पहाड़ों का विस्मय—सब कुछ हमारा ही था। कसौली, शांत, सफेद, जादुई, इन सब बातों को याद रखता था, हमारे पदचिह्नों, हमारी हंसी, हमारी

हमें सब कुछ भुलाकर फिर से बच्चे बनने की चुनौती दे रही हो— जीवंत, हंसते हुए, बेरोक-टोक।
बर्फ के ढेर में छलांग
यह एक अदम्य उत्साह था। कसौली की ठंड किसी जंगली जानवर की तरह चुभ सकती थी—तीखी, निर्मम और लगातार—लेकिन इसने मेरे अंदर की आग को कभी बुझाया नहीं। वह आग हमारे चारों ओर जमी बर्फ से भी ज़्यादा तेज़ जल रही थी। ताज़ी बर्फ का रोमांच, एक नई सफेद दुनिया पर सबसे पहले अपने पदचिह्न छोड़ने का उत्साह, और उससे मिलने वाली अपार खुशी—यह सब कुछ अदम्य था।
मेरी खुशी की चीखें ठंडी पहाड़ी हवा में गूंज उठीं, क्रिकेट मैच में गेंद के छक्के के लिए जाने पर उमड़ने वाली जयकार से भी कहीं अधिक तेज़। ठंड मेरे गालों को जकड़ रही थी, लेकिन उस पल का जादू हमेशा जीत जाता है।
हमारे माता-पिता अंदर से आवाज़ लगाते, हमें वहीं रहने की चेतावनी देते, लेकिन हम फिर भी चुपके से, छिपकर और मुस्कुराते हुए, दरवाजे के बाहर की बर्फीली दुनिया में निकल जाते। यह वह समय था जब बर्फ पिघलने लगी थी और हवा कांच की तरह चमकने लगी थी— स्पष्ट, स्वच्छ, हल्की सर्दियों की धूप में दमकती हुई।
बाहर बहुत देर रहने के बाद मेरे पैर बर्फ के टुकड़ों जैसे ठंडे हो गए थे, उंगलियां अकड़ी हुई और दर्द कर रही थीं। हम झटपट अंदर भागते, अपने गमबूट्स को टटोलते, ठंडी, बेढंगी उंगलियों से गीले मोजे उतारते और अपने सुन्न पैरों को हीटर या आग की तरफ बढ़ाते। ठंडी त्वचा पर गर्मी की चुभन पहले तो असहनीय पीड़ा देती, फिर आनंद देती—राहत की ऐसी तीव्र लहर कि मुझे लगभग हंसी आ जाती। अंतिम चुनौती

हमारी सर्दियों की तमाम रोमांचक यात्राओं में से एक सबसे अलग थी—यह साहस की एक ऐसी परीक्षा थी, एक ऐसा कदम जो साहसी और डरपोक को अलग करता था। यह महज़ एक खेल नहीं था; यह खुद को साबित करने का, उस बहादुरी का स्वाद चखने का मौका था जिसकी हर कोई चर्चा करेगा।
वुड कॉट कॉटेज, जो एलएलएस कैंपस के ऊपर स्थित था, में एक ऊँची चट्टान से बर्फ का ढेर दिखाई देता था। वह ढेर हमारा लैंडिंग पैड था, हमारा सफेद गद्दा। हम चट्टान से ठंडी, बर्फीली हवा में छलांग लगाते थे, इस भरोसे के साथ कि बर्फ हमें संभाल लेगी। मेरे दोस्त के बाद मेरी बारी थी—वह मेरा “टेस्ट जंप” था। उसके पीछे छिपकर मैं अपनी बारी का इंतज़ार कर रहा था, मेरा दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा था कि मुझे लगा जैसे हर कोई उसे सुन सकता है। मेरी साँसें गर्म भाप के बादलों की तरह निकल रही थीं। पंद्रह फीट नीचे बर्फ का ढेर था, चकाचौंध से भरा और शांत। क्या होगा अगर यह काफी न हो? क्या होगा अगर मैं गलत तरीके से उतर जाऊँ?
मेरे दोस्त ने ज़रा भी संकोच नहीं किया। वह एक प्रशिक्षित पैराशूटिस्ट की तरह सहजता से कूदा, ठंडी हवा को चीरता हुआ, एकदम सुरक्षित और स्थिर रूप से उतरा। वह बाहर निकला, अपने शरीर से बने गड्ढे पर बर्फ़ डाली, और फिर मेरी तरफ देखा। सबकी निगाहें मेरी ओर मुड़ गईं।
मेरे शरीर की हर कोशिका पीछे हटने, सुरक्षित रहने के लिए चीख रही थी। लेकिन यह कायरता होती। और कायरता आग से भी तेज़ी से फैलती—हमारी क्रिकेट टीम में, हमारे हॉकी दोस्तों में, सैनिटोरियम के बच्चों की पूरी छोटी सी दुनिया में। हम पहाड़ी बच्चे थे—स्वभाव से साहसी। हमें न जानवरों से डर लगता था, न ऊंचाइयों से, न जंगलों से, न पहाड़ों के अंधेरे से। हम पेड़ों पर

चढ़ते थे, बेफिक्र होकर दौड़ते थे, और पहाड़ों की आत्मा हम सब में बसी हुई थी।
फिर भी, रोमांच मुझे अपनी ओर खींच रहा था। यही मेरा मौका था। नीचे मेरे दोस्त का चेहरा जीत की चमक से दमक रहा था, मानो वह इंतजार कर रहा हो। आखिर हम साहसी किस्म के लोग थे— घने जंगलों, जंगली जानवरों, ऊंचाइयों या कसौली की पहाड़ियों पर होने वाले खतरनाक कारनामों से बेखौफ।
अगर मैं इसमें सफल हो गया, तो यह छलांग एक ऐतिहासिक घटना बन जाएगी - एक ऐसी कहानी जिसे बार-बार सुनाया जाएगा, मेरे लिए एक गौरवशाली उपलब्धि।
कथनी और करनी में समानता
“जिसका सामना नहीं कर सकते, उसे बदल भी नहीं सकते।” ये वाक्य मेरे दिमाग में गूंज रहा था। यही मेरा पल था। मैं एक स्कूली छात्र था, लेकिन अभी मुझे एक वयस्क की तरह खड़ा होना था।
इसलिए, मैं आगे बढ़ा।
एक… दो… तीन… मैंने चट्टान से धक्का दिया।
डर दौड़ते-दौड़ते गायब हो गया। खेल भावना ने मुझे आगे बढ़ाया और मेरा शरीर बर्फीली हवा को चीरता हुआ आगे बढ़ा। मेरे पेट में गुदगुदी होने लगी, जैसे ठंडी हवा मेरे चेहरे पर लग रही हो। फिर—धड़ाम! एक धीमी, दबी हुई सी आवाज़। मेरे चारों ओर बर्फ़ पाउडर की तरह फट पड़ी। एक पल के लिए सब कुछ थम गया। फिर दुनिया आवाज़ों और रंगों से भर उठी।
मैं सुरक्षित था। मुझे कोई चोट नहीं आई थी। मेरा दोस्त हंसता- खेलता, खुशी से चिल्लाता हुआ आगे बढ़ा और दस्ताने पहने हुए हाथ से मुझे ऊपर खींचने लगा।

ठंडी हवा की तरह तीखी और मीठी खुशी मेरे अंदर उमड़ पड़ी। बर्फ नरम और गहरी थी; मेरे पैर एक संतोषजनक चरमराहट के साथ धंस गए। जहाँ मैं उतरा था, वहाँ एक बड़ा सा गड्ढा बन गया था। यह उन सख्त चटाइयों से भी कहीं बेहतर महसूस हुआ जिन पर हम मसूरी के बोर्डिंग स्कूल में संस्थापक दिवस पर जिम्नास्टिक हॉर्स से कलाबाजी करने के बाद गिरे थे।
मैंने कर दिखाया। मैंने छलांग लगा दी। और उस पल—कांपते हुए, मुस्कुराते हुए, बालों में बर्फ और सीने में जीत का एहसास—मुझे लगा जैसे मैं दस फीट लंबा हो गया हूँ।
बर्फ मेरे ऊनी कपड़ों से चिपक गई, कॉलर से नीचे फिसल गई और मेरे बूटों में भर गई, लेकिन मुझे कोई परवाह नहीं थी। मेरे दोस्तों की हंसी मेरे चारों ओर गूंज रही थी, उनकी जयकार ठंडी हवा के साथ बह रही थी। कुछ पलों के लिए, मैं अपनी छोटी सी दुनिया में हीरो बन गया था।
मेरे सभी दोस्त पेड़ पर चढ़ने में माहिर थे, बंदरों की तरह डालियों पर झूलते थे। बस यही एक चीज़ थी जो मैं नहीं कर पाता था। ऊँचाई पर चढ़ने या ऊबड़-खाबड़ डालियों पर संतुलन बनाने की मुझमें कोई प्रतिभा नहीं थी। लेकिन बर्फ के नरम, गहरे ढेर में छलांग लगाना मेरा अपना साहस था। यह मेरा साहस का क्षण था, मेरा अपना रोमांच।
जब मैंने चारों ओर देखा, ठंडी हवा में मेरी सांसों से भाप निकल रही थी, तब मुझे एहसास हुआ कि साहस का मतलब हमेशा पेड़ पर चढ़ना या दिखावा करना नहीं होता। कभी-कभी इसका मतलब होता है झिझक के खिलाफ एक साहसी छलांग लगाना, किसी ठंडी, अनिश्चित और रोमांचकारी चीज़ में कूद जाना— और फिर हंसते हुए वापस आना।

अध्याय आठ

बर्फ ने हमें क्या सिखाया
जब मैं अपने बचपन के बारे में अनौपचारिक रूप से बात करता हूं तो लोगों को सबसे ज्यादा आश्चर्य इस बात से होता है:
मैं एक ऐसी जगह पर पला-बढ़ा जहाँ सर्दी समय पर आती थी, बर्फबारी की उम्मीद रहती थी और खामोशी रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा थी। कसौली में बर्फबारी कोई मामूली घटना नहीं थी, बल्कि एक मौसम था। सड़कें रातोंरात गायब हो जाती थीं। सुबह तक पैरों के निशान मिट जाते थे। छतें बर्फ के भार से झुक जाती थीं और दुनिया बिना इजाज़त के थम सी जाती थी। हम सर्दियों के बीतने का इंतज़ार नहीं करते थे; हम उसी में जीते थे।
लोगों को अक्सर बर्फ से ज्यादा इस बात से हैरानी होती है कि हमने कितनी सहजता से इसके साथ तालमेल बिठा लिया। आग जल्दी जलाई जाती थी। पानी बड़ी सावधानी से लाया जाता था। ऊनी कपड़े फैशन की बजाय सोच-समझकर पहने जाते थे। आवाजें धीमी हो जाती थीं। चाल धीमी हो जाती थी। जब भारी बर्फबारी होती थी, तो जीवन थम सा जाता था—डर से नहीं, बल्कि सम्मान से। पहाड़ ही जीवन की गति तय करते थे।
हम कभी ऊबे नहीं। हम चौकन्ने थे। बर्फ में दरार, चीड़ की शाखाओं से गिरती बर्फ, शांत सुबह में सीधा ऊपर उठता धुआँ—ये वो पल थे जो मायने रखते थे। इस तरह जीने से आपको चुपचाप एक बात सीखने को मिलती है: जीवन को परिपूर्ण महसूस करने के लिए निरंतर शोरगुल की आवश्यकता नहीं होती।
लोग इस बात से भी हैरान होते हैं कि बचपन में हम कितने सुरक्षित महसूस करते थे। ऐसा इसलिए नहीं था कि कोई खतरा नहीं था—खतरे तो

थे—बल्कि इसलिए कि हमें बचपन से ही सुरक्षा का एहसास हो गया था। मौसम, जानवर, भूभाग, यहाँ तक कि मौन को भी सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। जिज्ञासा को मार्गदर्शन दिया जाता था, कुचला नहीं जाता था।
कसौली ने हमें जो दिया वह अतीत की यादें नहीं, बल्कि संतुलन था। गर्माहट और ठंडक के बीच। गति और स्थिरता के बीच। यह जानने के बीच कि कब कार्य करना है और कब प्रतीक्षा करनी है।
वह सबक मेरे मन में बसा हुआ है। और शायद इसीलिए, जब मैं इसका ज़िक्र यूँ ही कर देता हूँ, तो लोग हैरान हो जाते हैं: एक शांत जीवन भी अधिक समृद्ध हो सकता है।

अध्याय नौ

कसौली में एक श्वेत क्रिसमस की रात (1960-1970)
सर्दियों में कसौली एक खामोशी में डूबा हुआ सा लगता था—एक पहाड़ी कस्बा जो सन्नाटे और चीड़ की खुशबू से महकी हवा में लिपटा रहता था। चिमनियों से धीरे-धीरे धुआँ निकलता, धूसर आसमान में ऊपर उठता और फिर धुंध में गायब हो जाता। चीड़ के पेड़ ऊँचे और स्थिर खड़े थे, उनकी पत्तियाँ पाले से चमक रही थीं। यहाँ तक कि कुत्ते भी कम भौंकते थे, मानो पहाड़ खुद इंतज़ार कर रहे हों। 1960 और 1970 के बीच, यहाँ का मौसम चकाचौंध भरी रोशनी या भव्य दावतों के बारे में नहीं था। यह कुछ अधिक सौम्य था—एक अनकही खुशी, जो लोगों और उनके घर कहलाने वाले स्थान के बीच साझा की जाती थी। यह मनुष्यों के बीच शांति और सद्भावना का संदेश था: लूका 2:14 — “परमेश्वर की महिमा स्वर्ग में हो, और पृथ्वी पर शांति और मनुष्यों के प्रति सद्भावना हो।”
घर पर की जाने वाली तैयारियां
क्रिसमस का मौसम उससे बहुत पहले ही शुरू हो जाता था। घी, चीनी और मसालों की खुशबू कई दिनों तक हमारे घर में फैली रहती थी। मेरी माँ ऊनी शॉल ओढ़े चूल्हे और लकड़ी की मेज के बीच घूमती रहती थीं, पकवान बनाती रहती थीं—खोआ और नारियल से भरे गुज्जा पकवान, बाजरे की टिक्की और कुरकुरे डोनट्स जो अखबार की शीट पर ठंडे होते रहते थे।
यह वह मौसम था जिसे यरूशलेम में यीशु के जन्म के समय के रूप में याद किया जाता है, और बाज़ार में बेकरी के भट्ठे देर रात तक जलते रहते थे, जिनमें लजीज बेर के केक पक रहे थे—ऐसे केक जिनकी खुशबू हवा में घुल जाती थी। बच्चे बेसब्री से अपने हिस्से के टुकड़ों

का इंतज़ार करते थे, जबकि पिता अखबार में लिपटे केक के डिब्बे लेकर घर लौटते थे। पर्दे धुले हुए थे, कांच के बर्तन चमक रहे थे, और घर में एक शांत चमक थी। शाम होते-होते, हर खिड़की स्वागत के दीपक की तरह हल्की रोशनी से जगमगा रही थी।
वॉचनाइट सेवाएं
जैसे-जैसे दिसंबर गहराता गया, कसौली में ठंड बढ़ती गई। लोग ऊनी कपड़ों की कई परतों में लिपटे हुए बाहर निकले—मफलर ऊपर तक कसे हुए, मंकी कैप नीचे तक खींची हुई, ठंडी उंगलियों पर ऊनी दस्ताने कसे हुए और पहाड़ी हवा से बचाव के लिए भारी ओवरकोट—जैसे ही वे बाहर निकले, उनकी सांसों से धुंध के बादल उठने लगे। चीड़ और धुएं की महक हवा में फैली हुई थी, और पहाड़ियाँ खामोशी से पवित्र रात के आने का इंतजार कर रही थीं।
लूका 2:12-14 — “और यह तुम्हारे लिए एक चिन्ह होगा; तुम उस शिशु को कपड़े में लिपटा हुआ, चरनी में लेटा हुआ पाओगे…”
हमारे छोटे से पहाड़ी कस्बे में भी, खिड़कियों में हल्की रोशनी टिमटिमा रही थी, जो पाले से ढके शीशे के पीछे चमक रही थी। आशा और शांति के गीत शांत सर्दियों की रात में गूंज रहे थे, चीड़ और लकड़ी के धुएं की हल्की सुगंध के साथ घुलमिल रहे थे—उस दिन जन्मे उद्धारकर्ता की खुशी। और जैसे-जैसे दिन छोटे होते गए और शामें तेज होती गईं, कस्बे पर एक शांत उम्मीद छा गई। सैनिटोरियम के कर्मचारी, उनके परिवार और पड़ोसी सब एक साथ इकट्ठा हुए, सबने मास्क कसकर पहने हुए थे और हाथों में मशालें थीं। कोहरे में कुछ लालटेनें झिलमिला रही थीं, तभी रात में पहला कैरल गूंजा, उसके बाद एक और जाना-पहचाना भजन और कैरल गाया गया। ढोलक की थाप बरकरार थी, डफली की झंकार थी और हारमोनियम की मधुर धुन पहाड़ियों की खामोशी में घुल रही थी। सभी गायक एक सुर में

24 तारीख शांति से बीत गई। दिन सामान्य से धीमी गति से गुजरा।
पहाड़ियों पर एक ऐसी खामोशी छाई हुई थी जो पवित्रता का एहसास कराती थी। परिवार अपने घरों को साफ-सुथरा कर रहे थे, और कभी-कभार कोई ठंड का जायजा लेने के लिए बाहर निकल आता था।
रात के खाने के बाद, हमने ऊनी ओवरऑल, दस्ताने और बूट पहन लिए। बाहर की हवा ठंडी थी—हमारे चेहरों पर चुभ रही थी और कानों में जलन पैदा कर रही थी—लेकिन रात का उत्साह ठंड से कहीं ज़्यादा था। हम बार-बार थर्मामीटर का तापमान देख रहे थे। गलियों में कुछ लालटेनें जगमगा रही थीं। समूह फिर से बन गए, इस बार छोटे, लेकिन ज़्यादा गंभीर। हमने धीरे-धीरे गाना शुरू किया, हमारी आवाज़ें अंधेरे में चीड़ की पत्तियों की सरसराहट में घुलमिल गईं। खामोश सफेद रात
फिर अचानक सब कुछ थम गया। हवा रुक गई। चीड़ के पेड़ गुनगुनाते हुए बीच में ही जम गए, और यहाँ तक कि कुत्ते भी चुप हो गए।
घड़ी में बारह बज गए।
और फिर, मानो किसी संकेत से, एक बर्फ का टुकड़ा नीचे गिरा और मशाल की रोशनी में चमक उठा—फिर दूसरा, और फिर तीसरा। कुछ ही पलों में, हवा बर्फ के टुकड़ों से भर गई। ऐसा लगा मानो आकाश ने ही अपनी बाहें खोल दी हों।
हमने गाना बंद कर दिया। पहली आवाज़ जो हमें सुनाई दी, वह बर्फ के छतों, शाखाओं और ज़मीन पर गिरने की हल्की सी सरसराहट थी— स्सस्सस्सस्स। बर्फ के टुकड़े घने और मुलायम होकर गिर रहे थे, बरामदे की रोशनी में सफेद ऊन की तरह चमक रहे थे।
किसी ने धीमी आवाज़ में गाना शुरू किया, “शांत रात, पवित्र रात, सब शांत है, सब उज्ज्वल है… चरवाहे यह नज़ारा देखकर कांप उठते

हैं… मसीह उद्धारकर्ता का जन्म हुआ है…” और बाकी लोग भी उसमें शामिल हो गए। शब्द रात में तैरते हुए गिरती बर्फ में घुलमिल गए। खामोश रात
शांत रात, पवित्र रात,
यह दृश्य देखकर चरवाहे कांप उठे;
दूर स्वर्ग से महिमा की धारा प्रवाहित होती है,
स्वर्गिक सेनाएँ हल्लेलुया गाती हैं;
मसीह उद्धारकर्ता का जन्म हुआ।
मसीह उद्धारकर्ता का जन्म हुआ।
सड़कें, छतें और पेड़ बर्फ की सफेद चादर में दब गए। ऊपर की ओर मशालें जलाकर देखा जाए तो अंधेरे से लाखों बर्फ के टुकड़े गिरते हुए दिखाई दे रहे थे। दुनिया सफेद हो गई थी। यहाँ तक कि बर्फ से ढके फर्न के पेड़ भी प्रकृति द्वारा उपहार स्वरूप दिए गए उत्सव के पेड़ों की तरह लग रहे थे।
हम बर्फ में चलते हुए बाज़ार के आखिरी घर तक पहुँचे, गाते-गाते— हमारी साँसें बादलों की तरह उठ रही थीं, हमारे पैर जमी हुई सड़क पर धीरे-धीरे चरमरा रहे थे। जब गाना खत्म हुआ, तब तक आसमान एक विशाल सफेद सन्नाटे में बदल चुका था।
घर लौटने पर, खिड़कियों में लगे पॉइन्सेटिया के फूल पाले के बीच लाल रंग से चमक रहे थे, मानो शांति और आनंद की फुसफुसाहट कर रहे हों। उस रात, कसौली बर्फ की चादर के नीचे सो रहा था— शांत, सफेद और पवित्र।
क्रिसमस के गीत फीके पड़ गए, लालटेन की रोशनी कम हो गई, फिर भी हवा में एक शांति का भाव बाकी था। सदाबहार पेड़ के नीचे रखे उपहार गायब हो गए थे, जो ईश्वर के प्रेम के प्रतीक के रूप में

दिए गए थे—ऐसा लग रहा था मानो स्वर्ग हमारे छोटे से कस्बे को छूकर निकल गया हो।
आज भी जब मैं उस रात को याद करता हूँ, तो मुझे वो रात याद आ जाती है—बर्फ से ढकी कसौली एकदम शांत थी, और ऐसा लग रहा था मानो स्वर्ग हमारे छोटे से शहर के बहुत करीब आ गया हो।
शांत बर्फ
अगली सुबह, दुनिया बदली हुई थी—एक मोटी सफेद चादर के नीचे शांत। कस्बा मानो पुनर्जन्म ले चुका था, हर छत, रेलिंग और पत्थर की सड़क बर्फ की नरम परत से कोमल घुमावों में तब्दील हो गई थी। चीड़ की शाखाएँ बर्फ के भार से झुकी हुई थीं, उनकी सुइयाँ छोटे- छोटे चमकते क्रिस्टलों से जमी हुई थीं। पिछली रात के पदचिह्न वहीं जम गए थे, कहीं नहीं जा रहे थे। चिमनियों से धीरे-धीरे धुआँ उठ रहा था, और कस्बा धीरे-धीरे जाग रहा था—शांत, सौम्य, मानो चमत्कारों से भरी रात के बाद भी अपनी साँस रोके हुए हो।
हवा एकदम शांत थी, चीड़ और ठंडी मिट्टी की महक से भरी हुई। बारिश या ओलों के विपरीत, जो छतों पर खड़खड़ाहट और थपथपाहट करते हैं, यह हिमपात चुपचाप, एक कोमल, धीमी फुसफुसाहट की तरह हर उस चीज़ को छू रहा था जिस पर वह गिर रहा था। बीते दिन के पदचिह्न मिट गए थे, उनकी जगह सफेद बर्फ की एक अखंड चादर बिछ गई थी। पूरा शहर मानो ठहर गया था, एक शांत तन्मयता में डूबा हुआ।
मैं दबे पांव बाहर निकली, मोजों के नीचे बर्फ ठंडी और कड़क थी, मैं इस बात पर हैरान थी कि यह हर सतह से कैसे चिपकी हुई थी, क्षितिज से झांकते हुए फीके सर्दियों के सूरज के साथ चमक रही थी। छिपे हुए घोंसलों से पक्षी धीरे-धीरे चहचहा रहे थे, उनकी मधुर आवाज़ सन्नाटे में गूंज रही थी। एक चहचहाहट—जैसे अचानक "पॉप" की आवाज़—ने मेरा ध्यान फोटोग्राफर के कैमरा बॉक्स पर एक

जगह की ओर खींचा, जिससे मुझे पिछले हफ्ते ली गई हमारी पारिवारिक तस्वीर याद आ गई।
बाज़ार की जानी-पहचानी पत्थर की गलियाँ भी जादुई लग रही थीं—हर पत्थर सफेद किनारों वाला था, मानो जमे हुए कांच की तरह चमक रहा हो। ऊपरी और निचली गलियों में सन्नाटा पसरा था; जो कुछ लोग इधर-उधर घूम रहे थे, वे धीरे-धीरे चल रहे थे, अपने पीछे बर्फ के निशान छोड़ रहे थे, उनकी साँसें छोटे-छोटे बादलों की तरह उठ रही थीं। बर्फ ने दिन को अपने कब्जे में ले लिया था, और बाकी सब कुछ गौण सा लग रहा था।
मैं वहीं खड़ा रहा, उस सन्नाटे, उस चमक, उस जमी हुई खूबसूरती को महसूस करता रहा, और मुझे अपने माता-पिता की वो बातें याद आ गईं कि हर पल में आश्चर्य देखना चाहिए। उस शांत, बर्फीली सुबह में, मैं पूरी तरह समझ गया। कसौली में बचपन सिर्फ खेल-कूद या शरारतों के बारे में नहीं था—यह दुनिया को देखने, महसूस करने और उसमें मौजूद रहने के बारे में था, जो एक पल में पिघलकर गायब हो सकती थी।
जब कसौली बर्फ से ढक गया, तो सब कुछ मंद पड़ गया। हमें संभलकर चलना पड़ता था, वरना हम गिर जाते। माँ ने हमें अंधेरा होने से पहले अपना काम खत्म करने को कहा और हमने उनकी बात मानी। हम घर के पास, एक-दूसरे के करीब रहे। मैंने इंतज़ार करना, चुप रहना और छोटे-छोटे काम ठीक से करना सीखा। ठंड बाहर ही रही, लेकिन अंदर कुछ स्थिर हो गया, जैसे कोई गर्म रोशनी जो कभी बुझती नहीं। बर्फ के पहाड़ों से हटने के बावजूद, वे शांत सबक मेरे मन में बसे रहे।

अध्याय दस

Ending: White Kasauli
जैसे-जैसे बर्फ पिघलती गई और पहाड़ शांत होते गए, कसौली धीरे- धीरे अपनी सफेद नींद से जाग उठा। पैरों के निशान गायब हो गए, बर्फीले हिस्से नरम पड़ गए और जीवन अपनी जानी-पहचानी लय में लौट आया। फिर भी उन सर्दियों की यादें—रोमांच, हंसी, साहसिक कारनामे, साथ में खाए गए भोजन की गर्माहट, पहाड़ियों पर चुपचाप गिरती बर्फ की खामोशी—मेरे दिल में हमेशा के लिए बसी रहीं। पक्षी लौट आए, सुबह के भोजन की तलाश में इधर-उधर उड़ने लगे। लंगूर शाहबलूत के पेड़ पर ऊँचाई पर बैठे ताज़े शाहबलूत तोड़ रहे थे, जैसे ही सूरज की पहली किरणें कोहरे को चीरकर निकलीं। एक गिलहरी ने डाल से तेज़ आवाज़ में चीं-चीं की, मानो झाड़ियों में घूम रही किसी जंगली पहाड़ी बिल्ली की आहट दे रही हो। तोते खड़क के पेड़ों पर लौट आए थे, उनके हरे पंख भूरी छाल पर चमक रहे थे जहाँ सूरज की रोशनी तनों को गर्म कर रही थी। और जल्द ही गौरैयों और कौवों की जानी-पहचानी आवाज़ें फिर से हवा में गूंज उठीं— हमारे रोज़मर्रा के जीवन के वफादार साथी।
सर्दी का मौसम समाप्त हो गया था, और वसंत के आगमन की आहट के साथ ही वातावरण में एक नई स्फूर्ति का संचार हो रहा था—और अपने साथ आने वाले जीवन और रंगों की अनुभूति हो रही थी। सर्दी बीत गई थी, लेकिन इसने एक ऐसी शांति छोड़ दी थी जो बर्फ पिघलने के बाद भी लंबे समय तक बनी रही—एक शांत स्मरण कि जीवन के हर पल की तरह, हर मौसम की अपनी एक सुंदरता होती है, और अंत में भी नई शुरुआत का वादा छिपा होता है।

से ढकी पहाड़ियाँ—ऐसा लग रहा था मानो उस पल की गर्माहट में अभी भी कैद हों।
पन्नों के बीच पतली-पतली सेलोफ़ेन की चादरें बिछी थीं, हल्की-सी सिकुड़ी हुई, पलटते समय सरसराहट करती हुई, एक याद को दूसरी याद से छूने से रोकती हुई। कभी-कभी, कागज़ और पुराने गोंद की हल्की सी गंध अंदर से उठती थी, मानो वर्षों को ही उन पारदर्शी चादरों के बीच दबा दिया गया हो।
हर पन्ना पलटना मानो समय में पीछे जाने जैसा था—धीरे-धीरे, कोमलता से—एक-एक तस्वीर के साथ। और जब मैंने एल्बम बंद किया, तो मुझे एहसास हुआ कि कुछ भी पूरी तरह से खत्म नहीं हुआ था— वो शहर, वो क्रिसमस गीत, वो हंसी—सब कुछ उन पन्नों और मेरे दिल के बीच कहीं न कहीं जीवित था।

बर्फ से परे कसौली की खोज करें
यदि पुराने कसौली की बर्फीली पहाड़ियों और सर्दियों के जादुई माहौल ने आपका दिल मोह लिया है, तो आप शहर को अन्य तरीकों से भी देखने का आनंद ले सकते हैं:
कसौली की यादें: चीड़ के पेड़ों और पहाड़ों के बीच पलना-बढ़ना
– एक संपूर्ण संस्मरण। दैनिक जीवन, बचपन के रोमांच का अनुभव करें,
और उन लोगों की शांत गर्मजोशी जिन्होंने इस शहर को अपना घर बनाया।
कसौली: चार ऋतुएँ – एक संक्षिप्त, चिंतनशील पुस्तक। स्मृतियाँ, 60 और 70 के दशक के मौसमों और पलों की यात्रा, कसौली के माध्यम से।
चारों ऋतुएँ— वसंत के पहले फूलों से लेकर शरद ऋतु के कोमल सुनहरे रंगों तक
रोशनी।
ये पुस्तकें मिलकर कसौली के संपूर्ण स्वरूप को प्रस्तुत करती हैं—इसके मौसमों को, इसके लोगों को और इसके शाश्वत आकर्षण को।

अस्वीकरण -2
ChatGPT का उपयोग केवल भाषा और अभिव्यक्ति को परिष्कृत करने के लिए किया गया था। कहानी, अनुभव, भावनाएँ और रचनात्मक निर्देशन पूरी तरह से लेखक के हैं।

लेखक के बारे में
सैमुअल ब्राउन ने अपना बचपन हिमालयी शहर कसौली में बिताया, जहाँ चीड़ के जंगलों, घुमावदार रास्तों और छोटे-छोटे समुदायों ने उनकी शुरुआती यादों को आकार दिया। कहानी कहने और जीवन के शांत विवरणों के प्रेमी, वे उन वर्षों की सुंदरता और उस आस्था को संजोने के लिए लिखते हैं जिसने उन्हें दिशा दी। वे पोषण, स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती भी सिखाते हैं—शक्ति, स्पष्टता और दीर्घायु के साथ जीने के सरल, व्यावहारिक तरीके साझा करते हैं। उनकी कसौली त्रयी उन पहाड़ियों को श्रद्धांजलि है जहाँ उनका पालन-पोषण हुआ और प्रकृति के करीब बिताए गए बचपन के शाश्वत आश्चर्य को दर्शाती है।
धन्यवाद का पत्र
यदि आप इस पुस्तक को किंडल अनलिमिटेड के माध्यम से पढ़ रहे हैं, तो इसे पूरा पढ़ने के लिए धन्यवाद। आपका पूरा पढ़ना लेखक को सीधे तौर पर सहयोग देता है और अधिक पाठकों को इस पुस्तक को पढ़ने में मदद करता है। पत्राचार के लिए: samuelbrowne.writes@gmail.com